जीवन मन्त्र

(हिन्दी संस्करण)



लेखक

परम कृपालु पूज्य गुरुदेव भगवान
श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरीश्वर पद पंकजमधुप
मुनि जयन्तविजय 'मधुकर'

प्रकाशक :

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन

सरस्वती-विहार, भाण्डवा (राज०)

प्रकाशक —
श्री फतहसिंह लोढा
(संचालक)
श्री यतीन्द्र साहित्य-सदन,
सरस्वती विहार
भीलवाड़ा (राज०)

प्रथम संस्करण
[illegible] १९६०
मूल्य रु० १ ५० पैसा

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन
भीलवाड़ा के प्रबन्ध से
श्री हमचन्द चौहान द्वारा
सतोष प्रिंटर्स नगरा, अजमेर
में मुद्रित ।

अर्पण

जिनके पावन कर कमलों ने मुझे बनाया है इन्सान।
जिनके पावन चरणकमलों में मैंने पाया है विश्राम।
जिनकी प्रबल कृपा ने मुझ को साहस धैर्य प्रदान दिया।
अपने मुनि जिनेन्द्र गुरु का 'जीवन मंत्र' सुभाव लिया।

चरण रेणु

जयविजय 'मधुकर'

"ज्ञानक्रियाभ्यामोक्ष"

जीवन और मन्त्र का सनातन समवाय सम्बन्ध रहा है, मन्त्र रहित जीवन में मौनता अशक्य है और जीवन रहित मन्त्र में जयता असम्भाव्य है।

हमारा जीवन राष्ट्र, धर्म और समाज के संयोगों से शाश्वत संयोजित रहा है अतएव प्रतिपल मन्त्र शक्ति की आवश्यकता रहती है, मन्त्र का मनन ही मेधा को धारणावती बनाता है, राष्ट्र को राजनिष्ठा का पाठ पढ़ा सकता है और समाज को तन्त्र का संगीत सुना सकता है।

इस युग का जीवन यन्त्र मय है, यन्त्र मन्त्रमय है, मन्त्र तन्त्र मय है, मन्त्र तपोनिधियों की अलौकिक सृष्टि है, जिसमें विश्व के जीवों का कल्याण निहित है।

प्रस्तुत पुस्तक में मुनिपुंगव श्री जयन्तविजयजी ने जीवन के विभिन्न विचारों को विवेक योग से विशद कर विराट स्वरूप देने का प्रयास किया है वह मननीय है।

इसी प्रकार मुनिवर्य भगवती भारती की निरन्तर स्तुति करते हुए श्रमण संस्कृति का स्मरण कराते रहें यही मंगलमयी प्रेरणा है।

वि० सं० २०२३
कार्तिक कृष्णा पंचमी
राजगढ़ (मध्य प्रदेश)

पं० गोविन्दराम व्यास
हरजी (राजस्थान)

आमुख

पूज्य मुनिवर जैसे विद्वान् लेखक की 'जीवन मंत्र' सी प्राज्यप्रतिभ कृति के लिये मुझ जैसे अकिंचन को 'आमुख' लिखने का दुर्वह उत्तरदायित्व प्राप्त होना उनका मेरे प्रति प्रगाढ़ प्रेम होने का ही परिचायक है। नम धरती है और प्रेम रस। जैसे धरती पर 'उल्टी गंगा' की उक्ति अवश्य चरितार्थ होती रही है। किमधिकम्।

'जीवन मंत्र' मुनिवर श्री जयन्तविजयजी मधुकर प्रणीत दर्शन, भक्ति, कर्म, ज्ञान आदि का विचार मंथन है। पुस्तक प्रणेता विद्वान् एवं कर्म मग्न होने के अतिरिक्त सुकवि, लेखक तथा श्रेष्ठ वक्ता भी हैं अतएव विचारों की गहनता के साथ साथ भाषा की प्रांजलता, भाषा की प्रौढ़ता तथा शैली की रमणीयता सुबोधता भी प्रस्तुत पुस्तक में दर्शनीय है।

आज के इस युग में जब कि मानव जीवन में भौतिकवाद का घुन लग गया है, धार्मिक नैतिक व आध्यात्मिक साहित्य की स्पृहणीयता स्पष्ट है। मुनि श्री ने भी इस पुस्तक की प्रस्तुति में समाज के प्रति अपने कर्तव्य का उदार परिचय दिया है।

इसमें चिंतन मनन, पठन पाठन और लगभग बारह वर्षों के अपने जैन साधु जीवन के स्वानुभवों पर आधृत जीवन के रहन सहन, आचार विचार को प्रभावित करने वाली वे बातें हैं जो गृहस्थी वनस्थी, जैन-अजैन स्त्री-पुरुष युवा-वृद्ध प्रभृति उन सभी व्यक्तियों के लिये श्रेयस्कर हैं जो धार्मिक व नैतिक जीवन पथ पर आरूढ़ हैं।

सकल्प विकल्प व धारणा-ध्यानादि की घड़ियों में जो स्फुरणाएँ होती हैं वे सिद्धान्तों की भित्तियों पर शब्दों के परमाणु के माध्यम से द्रव्य-तुल्य जीवनोपम सजीव चित्र बन जाती हैं। पुस्तक का नाम 'जीवन-मंत्र' सार्थक है क्योंकि मंत्रों की जिस दिव्य शक्ति से तन पर मन का तथा मन पर आत्मा का जयी होने का भाव निहित रहता है उसी तरह दैनिक जीवन के उदाहरणों दृष्टान्तों द्वारा जिन की जिन उदात्त वृत्तियों का इसमें वर्णन किया गया है उनका लक्ष्य भी वही है।

'जन' शब्द का विश्लेषण पर्याय यदि यह भी है कि 'मन' को जीतने वाला 'जन' ही जैन है तो जैन धर्म, जैन समाज जैन धर्मावलम्बियों और जैन धर्माभिमुखी नर नारियों के लिये यह पुस्तक गौरव की वस्तु सिद्ध होगी।

युगानुकूल सम्प्रदाय दुराग्रह विलुप्त-सद्वृत्ति परायण धर्म के विशाल दृष्टिकोण को साधनाचल में ले कर अग्रगामी जैन साधु के रूप में पूज्य मुनिवर अपने उप नाम को सार्थक करने वाले ज्ञान पवन के 'मधुकर' रह कर 'बहुजन हिताय' 'बहुजन सुखाय' ऐसी अनेक सुन्दर कृतियों की सर्जना करते रहें यही ईश्वर से प्रार्थना है। इत्यलम्।

बाल निवास,
१४ नवम्बर १६६६
राणापुर

हरिविट्ठल त्रिवेदी
एम ए एल टी
'व्याख्याता'

सम्मतियाँ

'जाप करवा जेवु'

प्रस्तुत 'जीवन मन्त्र' पुस्तक ए सुविचारोनु सङ्कलन छे। खेर खर आ पुस्तक मने तो मन्त्रनी पेठे लाख लाख वार जाप करवा जेवु लाग्यु।

पुस्तकनी खास विशेषता तो ए छे के ए सदा काल चाली शके एवु छे। हमणा वीसमी सदी छे परन्तु भलेने त्रीशमी सदी होय के पचासमी सदी होय तो पण आ मथाळाने अने आ सुवचनो ने कदी बदलवानी जरूर रहे तेम नथी।

भारतीय सोसायटी — प० बेचरदास दोशी

अहमदाबाद

—

'जीवन मन्त्र' अनेक मन्त्रोथी सभर सुन्दर पुस्तक छे। ते नी वाणी मा हृदय ने स्पर्शी जवानी अद्भुत शक्ति छे, कारण आ मात्र ज्ञानी के चिन्तकनी वाक् छटा नथी, आ एक तपस्वी महात्मना साधकना अनुभवोनो जन हितैक लक्षी सारोद्गार छे। अमे आ पुस्तक हृदय पूर्वक आवकारीए छीए।

प्रोफेसर
स्वामिनारायण आर्ट्स कॉलेज
अहमदाबाद

दैनिक 'जय हिन्द'
कान्तिलाल 'आचार्य'

'राजयोगनो राजमार्ग'

मुनिराज श्री जयंतविजयजी 'मधुकर' श्रीए आ मन्त्रोमां योग ने ममत ने आधार बनाव्या छे तो कोईमां धर्मनो आशरो लीधो छे। कोईने राष्ट्रनो सहारो आप्यो छे तो कोईने व्यवहारना पाटले खुल्ला मेदानमां बेसाड्या छे। कोई ने कविताना मराले चढाव्या छे तो कोईने भक्तिना वातावरणमां डुबकी मरावी छे, आम विविध विषयोना प्रवाहो तेमणे स्वानुभवशील साधु जीवनना गंगोत्रीमां वहता कर्या छे। गमे ते मन्त्रो मानवी ते ते पवा हाना घाट पर बेसी आ मन्त्रोनुं पारायण करी सिद्धि मेलवे तेवो राजयोगनो राजमार्ग मुनिश्रीए बताव्यो छे।

ला द भारतीय विद्या मंदिर — प० अम्बालाल प्रेमचन्द शाह
अहमदाबाद — २०२१
दापावली

'सन्तोष अपशे'

प्रस्तुत 'जीवन मन्त्र' जीवन ने उन्नत बनावे, मलीनता ने नष्ट करे, धर्म विमुखने धर्माभिमुख बनावे निराशाने आशामां बदली नाखे अने अज्ञान ने ज्ञानना किरणो अर्पे एवा सुभाषितोनो समूह छे जेमां आ गद्य कुसुमोनो परिमल अवश्य जैन अने जैनेतर वाचकने कंइक सुपथ्य वांच्यानो सन्तोष अपशे।

अहमदाबाद — शान्तिलाल ना. सरयम
बी ए (ऑनर्स)

निवेदन

मन्त्र का नाम सुनते ही सबको अपने मन का भान हो जाता है, किन्तु प्राणी के मन में मन्त्र अनेक हैं, और वे अनेक प्रकार के हैं। मन्त्र के इच्छुक भिन्न भिन्न स्वभाव के होते हैं।

लक्ष्मी तथा सरस्वती की साधना का मार्ग मन्त्र है।

स्थिरता एवं अस्थिरता को स्वरूप देने वाला मन्त्र है।

मारने और बचाने का साधन मन्त्र है।

दुश्मन को वश में करने वाला मन्त्र है।

अग्नि को शान्त करने वाला मन्त्र है।

हाथी तथा शेर के भय से मुक्त कराने वाला मन्त्र है।

मन्त्र जीवन का उद्धार करने वाला है।

प्रस्तुत पुस्तक में ऐसे ही विचारों को प्राथमिकता दी गई है। मन, वचन और काया तीनों के मिश्रण को मन्त्र के साथ यदि जोड़ दिया जाय तो अपूर्व आनन्द की प्राप्ति हो सकती है।

अनुभव चिंतन, मनन वाचन और श्रवण आदि सार भूत उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु इस 'जीवन मन्त्र' पुस्तक का सकलन तैयार किया गया है।

जीवन को जीने की दृष्टि से व्यतीत करने वाले बहुत होते हैं, किन्तु जीवन की सार्थकता को समझने वालों की संख्या कम होती है। अतः किस प्रकार इस जीवन को सफल बनाया जा सकता है, यह बात इस पुस्तक के पृष्ठों को खोलकर उन्हें पढ़कर और मनन कर हृदयग्राही की जाये ऐसा मेरा विनम्र निवेदन है।

इस संकलन के प्रकाशन में जिन जिन स्वधर्मि भाइयों ने सहयोग प्रदान किया है वे बधाई के पात्र हैं।

राजगढ़ निवासी मा. श्री बालचन्दजी जैन, 'साहित्य रत्न' का पूर्व प्रकाशित 'जीवन मन्त्र' गुजराती का हिन्दी अनुवाद करने में प्रशंसनीय योग रहा है।

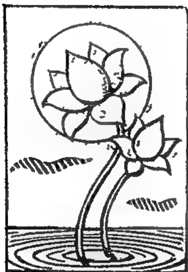
संकलन का मुद्रण कार्य करवाने की व्यवस्था हेतु भीलवाड़ा निवासी श्री फतहसिंहजी लोढा का सराहनीय सहयोग रहा है।

इस 'जीवन मन्त्र' पुस्तक का सर्वत्र अधिकाधिक पठन-पाठन हो, ऐसी मेरी हार्दिक इच्छा है। इत्यलम्।

राजेन्द्र भवन
राजगढ़ (म० प्र०)

मुनि जयन्तविजय
'मधुकर'





प्रकाशकीय

'मनुष्य जन्म नहीं बारम्बार' की साधकता हेतु पूज्यपाद मुनिराज श्री जयन्तविजयजी 'मधुकर' द्वारा लिखित 'जीवन मन्त्र' गुजराती का हिन्दी अनुवाद सभी पाठक एवं पाठिकाओं के पठन-पाठन हेतु श्री यतीन्द्र साहित्य सदन, भीलवाड़ा प्रकाशित करते हुए आनन्द की अनुभूति करता है।

प्रस्तुत प्रकाशन पर पं० श्री गोविन्द प्रसादजी व्यास हरजी, तथा पं० श्री हरिविट्ठलजी त्रिवेदी मालुआ ने अपने महत्व पूर्ण विचार प्रकाशन की सफलता एवं लेखक के परिश्रम को सफलीभूत बनाने हेतु लिख भेजे हैं, अतः ये आदरणीय हैं।

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन समय समय पर उच्च-कोटि के साहित्य प्रकाशित कर जन मानस के हाथों में पहुंचाता रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह 'जीवन मन्त्र' पुस्तक जिस स्वच्छ उद्देश्य से प्रकाशित की गई है उसकी सार्थकता हेतु जन साधारण इसे अपनायेगा और इसके अधिकाधिक प्रचार हेतु सहयोग देगा। अस्तु।

३०-१२ ६७
सरस्वती विहार
भीलवाड़ा (राज०)

फतहसिंह लोढ़ा
(संचालक)
श्री यतीन्द्र साहित्य सदन

जीवन मन्त्र

卐



लेखक

श्रीमद्विजय यतीन्द्रसूरि शिष्य
मुनि जयन्तविजय "मधुकर"

आतम-भावना

परम मैत्री

प्रगटे हृदयना आगणे शुभ शान्ति सत दीपावली ।
तमसावरणने भेदनारी दिव्य ज्योतिष्कावली ।
सहु दुःखियोना दुःख कापु एहवी शुभ भावना ।
सुख थइ सहु सौख्य पामे एज रहे नित कामना ॥

क्षमापना

सतावणे जो कोइ मुजने, शान्ति तेहने आपवा ।
सन्तोष पूर्वक हुँ सहुँ ते आत्मगुण विकसाववा ।
जे वैर वृत्ति राखशे हुँ, तेहथी करी मित्रता ।
नहीं दिल दुभावु कोइनु राखी हृदय पवित्रता ॥

सर्वमय भाव

सहा कष्ट सहु जोइने छे जिन्दगी प्यारी सदा ।
आपी शकु नहीं जिंदगी तो लइ शकु नहा हुँ कदा ।
सम प्राण गणवु सर्वदा, मम ए र जिव वहतु रह ।
करु त्राण हुँ सहु जीवनु, सहु मृत्यु थी जीवन लहे ॥

परहित चिन्ता

चूरू न थाओ कोईनु थाओ सहुनु हित सदा ।
जगम अने स्थावर सहुए शान्ति पामो सर्वदा ।
तन, मन अने केशामनी वीणा सदा झणरती ।
दुःख भागे स्नेह जागु, एज इच्छे भारती ॥

परम वात्सल्य

आ लोक ने परलोकमा पण भावना एवी रहे ।
जैन शासन कल्पतरु सेवी सेवी सहु शिव सुख लहे ।
निज शक्ति थी रागी' करु हुँ सर्वने शासन प्रति ।
'राजेन्द्र' शक्ति 'जयन्त' अर्पो भावना मारी अति ॥



जीवन की कला

बिना ब्रेक का गाड़ी का कोई मूल्य नहीं, बिना पाटों के रेलगाड़ी कभी चल नहीं सकती तथा पागल हाथी बिना बन्धन के वश में नहीं रह सकता। इसी प्रकार ज्ञानियों के कथनानुसार बिना नियम का जीवन कभी कलापूर्ण जीवन नहीं बन सकता। ऐसे जीवन में यदि कला ढूंढने जाओगे तो तुम्हारे पीछे अनेक आपत्तियाँ खड़ी हो जावेंगी अतः इनसे बचो और नियम पूर्वक रहो।



जीवन की गाड़ी

नियम एवं संयम के बिना यदि व्यावहारिक कार्यों में सफलता नहीं मिल सकती तो फिर अनियमितता से जीवन कैसे सफल हो सकता है। दो पाटों के बिना कभी रेलगाड़ी चल नहीं सकतीं। इसी प्रकार ज्ञान एवं क्रिया के बिना जीवन की गाड़ी कदापि नहीं चल सकती। नियम पूर्वक रहे बिना जीवन की गाड़ी कभी उन्नति नहीं कर सकती अतः सन्मार्ग गामी का शरण और अनुशरण आवश्यक है।

जीवन अमृत या जहर

जीवन में अमृत एवं जहर दोनों है। परन्तु इसका न्याय तो जीवन व्यतीत करने की कला पर निर्भर है। जो स्वयं स्नेह मय, मिलनसार वृत्ति के द्वारा प्रेम पूर्वक जीवन व्यतीत करता है उसी का जीवन अमृत के समान है तथा जो द्वेष दृष्टा एवं तिरस्कार करता रहता है तो उसका स्वयं का जीवन जहर बन जाता है। ज्ञानियों का कहना है अमृत को जहर मत बनाओ। अमृत का उपयोग करते हुए अमरता के मार्ग को ग्रहण करो तो तुम्हारा जीवन भी धन्य बन जायेगा।

॥

रहेगा अमर जीवन ग्रन्थ

मन के मसी पात्र में बुद्धि की स्याही भरते हुए भाव लेखनी के द्वारा तुम्हारे जीवन ग्रन्थ को सम्पूर्ण लिख डालो। तुम्हारा यह कार्य अनोखा रहेगा। शरीर नहीं रहेगा किन्तु ग्रन्थ रह जायेगा, निन्दा नहीं रहोगे किन्तु तुम्हारी निन्दा लिखी रह जायेगी। जैसा तुम लिख दोगे वैसा तुम्हारा परिचय हो जायेगा। यदि तुम्हारा सन्मार्ग रहेगा तो तुम आदरणीय एवं प्रशंसनीय बनोगे। सब कुछ चला जायेगा किन्तु तुम्हारे जीवन का ग्रन्थ अमर बना रहेगा।

जीवन का माधुर्य

क्षमा जीवन का मुख्य गुण है। जिसमें सम्पूर्ण पवित्रता भरी हुई है। क्षमा गुण साधना की श्रेष्ठ कड़ी है जिससे साधक साधना को सिद्ध कर सकता है। क्षमा गुण पतितों को भी पवित्र बना देता है जिसम अग्नि दूर हो जाती है। क्षमापना कर्म के कचरे को जला देती है। इसमें कर्मों को हमेशा के लिए जलना पड़ता है। क्षमापना ही जीवन का माधुर्य है मिठास है जो अमृत जैसा मधुर है। क्षमापना सबसे उत्तम संजीवनी है क्योंकि इससे मनामिक रोगों का शीघ्र नाश होता है। क्षमापना अन्धकार में दिव्य ज्योति के समान है। जिसके सहारे पथिक अपने रास्ते पर चल सकता है।



जीवन विकास

जितना गुड़ और घी डालो उतना ही माल (मिष्ठान) मीठा और पुष्ट बनता है। इसमें जितनी कमी रहेगी माल उतना ही कम स्वादिष्ट होगा। तुम्हारा यह जीवन माल मिष्ठान्न से कम नहीं है। जरा विचार तो करो! तुम्हारे स्वयं के जीवन में जितना शुद्ध संयम का घी एवं मधुर वचनों का गुड़ जितना अधिक मात्रा में होगा उतना ही तुम्हारा जीवन सब प्रकार से विकसित होगा तथा प्रत्येक को आनन्द देने वाला होगा।

ज्ञान दीप

ज्ञान का दीपक जिसके हाथ में होता है वह कहीं भी गोते नहीं खा सकता। जिसे तैरने का ज्ञान होता है वह डूब नहीं सकता। किन्तु समय पर डूबते हुए को तारने की शक्ति रखता है। किन्तु वह ज्ञान सम्यग् ज्ञान, आत्म-ज्ञान होना चाहिए। भौतिक ज्ञान नहीं। वर्तमान विकट है, संकट ग्रस्त है घोर विपत्तियों के बादल मंडरा रहे हैं। इसका एक मात्र कारण यही है कि आत्म-ज्ञान का अभाव है और भौतिक ज्ञान का प्रभाव है।

लक्ष और सिद्धि

जिधर न्यो उधर यह दुनियाँ भले पासे की भागीदार बनती है। दोना डाली पर बैठना इसे याद है। इसीलिए मनुष्य को अपना विशुद्ध लक्ष्य बना लेना नितान्त आवश्यक है। फिर किसी भी परिस्थिति में वह चंचल नहीं हो सकता किन्तु शर्त यह है कि व्यक्ति को अपने आप को धैर्यवान बनाना चाहिए गम्भीरता के साथ निश्चल एवं निश्छल प्रवृति धारण करना पड़ती है। सहन शील बनते हुए कर्तव्य पथ पर आगे चलना पड़ता है इसी में प्रत्येक कार्य की सिद्धि समाई हुई है।

क्षमा धारक का महत्व

क्षमा देना और मागना ये दोना ही वीर पुरुष के लक्षण हैं अनुचित करने वाला मोटा नहीं बन सकता। अनुचित को उचित करने वाला ही मोटा समझा जाता है। उचित करने के लिए क्षमा का शस्त्र धारण करना चाहिए। दुष्टों का समूह भले ही क्या न हो किन्तु उनक बीच में यदि एक क्षमा धारक सज्जन चला आय तो उन सब के वैर को बिखर सकता है।



द्रष्टा कोण

ज्ञान की आराधना की इच्छा करने वालों को ज्ञानियो क चरणो में नम्रता पूर्वक झुक जाना चाहिए। जहाँ तक ज्ञानियों का बहुमान करना नहीं आयेगा वहाँ तक ज्ञान का बहुमान होना असभव है तथा परिणाम में ज्ञान वर्णीय कर्मों का क्षय भी कठिन है। ज्ञान के प्रकाश में स्वय को ढू ढना सरल नहीं है। दिखने वाले पदार्थों को देखने मात्र से दृष्टा नहीं कहा जा सकता। किन्तु पदार्थ के सच्चे स्वरूप को उसी रूप में देखने से सच्ची दृष्टि आती है। सम्यक् ज्ञान होने पर ही ज्ञाता को दर्शन शुद्धि प्राप्त होती है तथा उसे ही दृष्टा कहा जा सकता है।

मर्यादा में रहो

मनुष्य को इतना भी कायर नहीं बन जाना चाहिए जिससे वह स्वयं की साधारण क्रियाओं को न निभा सके। इतना वाचाल भी नहीं होना चाहिए जिससे लोग उसे वाचाल कहकर उसकी उपेक्षा करें। इतना चुप भी नहीं रहना चाहिए जिससे लोग उसे मूर्ख समझ कर उसे मूर्खों की श्रेणी में बिठा दें। इतना उदार भी नहीं होना चाहिए जिससे लोग उसकी इज्जत लेने पर उतारू हो जायें।



धर्म का फल

धर्म की आराधना करना सरल है उतना उसे पचाना मुश्किल है। जिस घर में धर्म का राज्य होता है, धर्म का बोल-बाला हो उस घर में अशान्ति नहीं दिखाई देती। जिसको धर्म रुच गया है उसे कोई कभी सता नहीं सकता। उसके चेहरे पर हमेशा प्रसन्नता छाई रहती है। उसकी वाणी में मधुरता भरी रहती है उसके कार्यों में कल्याण का सागर ही लहरें मारता रहता है। मनुष्य को स्वयं विचार करना चाहिए कि मैं किस स्थिति में हूँ और मुझे कौन सी स्थिति प्राप्त करना चाहिए।

सिद्धि किस रीति से मिल सकती है

दूसरे काम करते हैं तो तुम्हें पसन्द नहीं तो फिर स्वयं ही अपना काम कर लेना चाहिए। नर कायर, कमजोर और आलसी बन जाता है इसी का तो यह फल है कि नर मन के अनुकूल अथवा स्वभाव के अनुकूल कोई कार्य नहीं होता। स्वयं के अनुकूल कार्य तभी होता है जब व्यक्ति स्वयं प्रमाद के चक्कर से दूर हो जाता है। अनुभव के आधार पर ही जाना गया है कि स्वयं ही स्वयं का घातक है। खोकर रोने बैठता है और दुनियाँ उपहास करती है। इसीलिए ज्ञानी कहते हैं कि भाई स्वावलम्बी बन। दूसरों पर भरोसा रखना यह कायरता का प्रतीक है।



व्यवहार शुद्धि

तुम परोक्ष में भी हर प्रकार से विशुद्ध रहने का प्रयत्न करो नहीं तो यह दुनियाँ कुछ भी कहने में नहीं चूकती, अच्छे से अच्छे को भी खराब कहने वाली यह दुनियाँ है तो तुम्हें खराब कहते कौन डरेगा ? इसीलिए स्वयं एवं दूसरों का कल्याण हो ऐसा प्रत्यक्ष एवं परोक्ष व्यवहार रक्खो। जिससे कि तुम्हें दबना न पड़े और न कोई तुम्हें कुछ कह सके।

हठाग्रह बुरी बला

हठाग्रह खराब होता है। यही तुझे स्वय के पथ से विचलित कर देता है। यही हठाग्रह दुराग्रह एव कदाग्रह का राक्षसी रूप धारण कर लेता है। यहाँ तू अपने निज के स्वरूप को भूल जाता है तथा तेरे विचारो में विकृति आ जाती है। अत हठाग्रह से मुँह मोडकर सदाग्रह सत्याग्रह को ही अपना ताकि आचार एव विचार दोना में शुद्धि बढे और तेरा पथ प्रशस्त बना रहे।



कहने के पहले विचारो

मुझे किसी को कुछ कहने के पहिले विचार करना चाहिये कि वह मेरी बात का क्या मतलब निकालेगा। मुझे उस समय बडी शर्म आयेगी जब मैं किसी प्रकार का आचरण तो करता नही किंतु दूसरों को सुधारने की बात करता हू। मैं किसी प्रकार की साधारण तपस्या तो कर नहीं सकता और दूसरों को तपस्या करने का उपदेश देता हूँ। जब मैं दूसरों को 'व्रत' 'पच्चखाण' कराता हूँ और स्वय नहीं करता तब मुझे लज्जा के वशीभूत होकर मुह छिपाना पड़ता है।

दर्शन कैसा होना चाहिए

आँख होते हुए भी अन्ध की तरह किस प्रकार चल रहे हो ? यदि आँख का उपयोग सत्य-दर्शन हेतु है तो ही अच्छा है अन्यथा व्यर्थ है। असत्य दर्शन कुमार्ग में ले जाता है तथा सत्य-दर्शन सन्मार्ग का पथिक बनाता है। जैसी दृष्टि वैसी यदि सृष्टि दिखे तो समझना चाहिए कि दृष्टि में विकार है। यदि सृष्टि के अनुसार दृष्टि बना ली जावे तो समझना चाहिए कि अभी अज्ञान है। किन्तु जो वस्तु जिस रूप में है और उसी रूप में दिखाई दे तो समझना चाहिए यही ज्ञान का लक्षण है।

卐

शक्ति-संचय

जिसका मन राजी है वह राजा, जिसका वचन पर काबू है वह मंत्री और जिसका शरीर स्वस्थ है और अपने वश में है उसे सेनाध्यक्ष समझा जाय। जो नाराज हो जाय वह राजा नहीं, जो ऊट-पटांग बोले वह मंत्री नहीं और जो स्वयं के शरीर को वश में नहीं कर सकता वह सेनाध्यक्ष नहीं हो सकता। विराग के पथ पर आगे बढ़ने वाले पुन्यवान को मन-वचन और काया को अच्छी स्थिति में रखना नितांत आवश्यक है तभी वह राजा, मंत्री तथा सेनाध्यक्ष इन तीनों की शक्ति अपने अन्दर जान कर निभा सकता है।

धर्म का स्वभाव

धर्म कदापि व्यक्ति का पतन नहीं करता, धर्म का स्वभाव है कि गिरते हुए को बचाना। जिसने धर्म को अपनाया है धर्म उसे अपनाता है। धर्म से दूर जाने का अर्थ है दुःखों को आमन्त्रण देना। भूत काल, भविष्यत काल और वर्तमान काल इन तीनों में वह स्वयं के स्वरूप में ही रहता है। स्वयं के स्वभाव से कभी विचलित नहीं होता। जब मनुष्य विचलित हो जाता है तभी वह स्वयं की प्रकृति बदलता है और परिणाम में वह दुःखों के गड्ढे में जा गिरता है। धर्म स्वयं की प्रकृति को कभी नहीं बदलता।



महत्ता का शिखर

यह इन्द्रिया का ढांचा क्या क्या नहीं करता है ? इसी में सभी शक्तियां समाई हुई हैं। मनुष्य की नस नस में जोश है, बल है और पुरुषार्थ की प्रबलता है। जहाँ तक वह अपने कार्य को रूप नहीं देता वहां तक कुछ नहीं हो सकता और जब वह अपने साथ युद्ध करने लगता है तभी वह महत्ता के शिखर पर चढ़ जाता है।

धर्म की शरण

जीवन में ज्ञान, मार्ग का काम करता है । दर्शन दीवाल रूप जैसा है और ऊपर की छत के समान है। इसी प्रकार तीनों के मिलने के पश्चात् अहिंसा संयम और तप को धारण करने वाला आत्मा महान बनती है। श्रेष्ठ कहलाती है। उसमें लोह चुम्बक जैसी आकर्षण शक्ति उत्पन्न हो जाती है। परिणाम में स्वर्ग के देवता दौडते चले आते हैं। और इस पवित्र आत्मा की सेवा करना अपना अहोभाग्य समझते हैं। इसीलिए जीवन में धर्म को धारण करना और उसकी शरण लेना यही जीवन की परमोत्कृष्ट साधना है।

❀

सुज्ञ कौन

इस प्रकार बात बात में क्या मुँह चढ़ा लेते हो, बात पूछो समझो और समझाओ। किन्तु इस कमजोरी को मुँह चढ़ाकर दूनी मत करो। मुँह चढ़ाने वाला धुन्ढा व्यक्ति सुज्ञ होते हुए भी अज्ञानी की श्रेणी में चला जाता है। खूब प्रसन्नचित्त रहना चाहिए तथा सभी बात कहना चाहिए और जानना चाहिए। अन्यथा तुम्हारी जिन्दगी व्यर्थ है यह समझना चाहिए।

मैत्री भाव से रहो

यदि तुम्हारा सब के प्रति स्नेह है तो सभी तुम्हें चाहेंगे। यदि तुम पर कोई नाराज है तो उसके कहने के पूर्व अपने स्वयं के मन का निरीक्षण करना चाहिए। तुम साफ हो तो तुम्हारे साथ कौन द्वेष कर सकता है? यदि तुम योग्य हो तो कौन तुम्हारा विरोध कर सकता है? यदि कोई विरोध करे तो तुम स्वयं को सम्हाल लो। जहाँ तक यदि कोई विरोध करता रहता है उसको वहाँ तक चैन नहीं मिलता। चैन से सोने और चैन से रहने के लिए योग्यता और मैत्री भाव की वृद्धि करना चाहिए।

卐

धब्बों के नजदीक मत जाओ

दूसरों के काले धब्बों के नजदीक अपने मन, वचन और काया को मत जाने दो। काले के नजदीक का स्पर्श स्वयं को काला बनाता है। यदि उसे मन से स्पर्श किया जाय तो मन अपवित्र बन जाता है और यदि वचन से स्पर्श करते हैं तो वाणी दूषित बनती है। इस गुण की महत्ता जिस ओर दिखाई दे उसे ग्रहण करो और फिर देखो तुम्हारे दाग सफेद हुए क्या? अवश्य धुल जावेंगे।

स्वयं की शक्ति का ज्ञान रक्खो

जिसे स्वयं की शक्ति का ज्ञान नहीं उसका जीवन व्यर्थ है। जिसको अपनी शक्ति का भान नहीं उसका सारा जीवन दुःखों में बीतता है। स्वयं की योग्यता जो समझ लेता है उसी को परम शांति मिलती है। योग्यता के अभाव में अगर कुछ कर दिया, कर लिया, लिया-दिया हो तो वह नतीजे में क्लेश वर्धक होगा और पीछे से दाता और प्राप्तकर्ता दोनों को पश्चाताप करना पड़ता है। शक्ति का ज्ञान न होने पर यदि शक्ति के साथ भिड़न्त हो जाय तो निश्चय ही अशांति बढ़ती है। इसीलिए हृदय में दृष्टि गड़ा कर अपनी योग्यता पहिचानो फिर डग भरो।



दृष्टि बदल कर देखो

तुम अपनी आंखों के चश्में उतार कर फिर देखो कि यह दुनियाँ और प्राणियों का व्यवहार तुम्हारे लिए प्रेरणा का कारण बन रहा है। चश्मों की रंग-बिरंगी तड़क भड़क में यदि तुमने सही रास्ता छोड़ कर अनुचित व्यवहार अथवा मानसिक चिंतन कर लिया हो तो यह दुःख कारक नहीं बल्कि दुःख दायक भी बन जाता है।

राज मार्ग पर चलो

रास्ता सीधी सड़क का लेना चाहिए जिससे किसी को पूछने की आवश्यकता न पड़े अन्यथा यदि भटक गये तो खड्डे में गिरना पड़ता है। भटकने के पश्चात् लक्षित स्थान पर पहुँचना बहुत मुश्किल है। अधूरे ज्ञानी को समझाना कठिन है। या तो पूरा विद्वान अच्छा जो सत्य के लिए लड़ता है सत्य को समझने की अपनी सरल प्रवृत्तियों से उसे अंगीकार कर लेता है तथा उसके अनुसार अपना समग्र जीवन बना लेता है। अथवा मूर्ख अच्छा जो कुछ भी नहीं जानता जो बात उसे समझा दी जावे उसी को अंगीकार कर वह अपना जीवन सुधार लेता है। किन्तु अर्ध ज्ञानी है जो न कच्चा है न पक्का जैसे कच्चा पक्का अन्न जिस प्रकार रोग उत्पन्न करता है इसी प्रकार अर्ध ज्ञानी व्यक्ति किसी की बात नहीं मानता। अपनी डफली व अपना राग अलापता रहता है। वह सुनने वालों और बोलने वालों के लिए अनिष्ट कर होता है।

भव भीरू की योग्यता

मोम ताप लगते ही पिघल जाता है। पत्थर को चाहे जितना गर्म करो किन्तु वह जरा भी पिघलता नहीं। इसी प्रकार मोम जैसे हृदय वाले को वीतराग की वाणी का स्पर्श करते ही असर हो जाता है और वह विनीत बन जाता है। किन्तु पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले को सुनाने वाला भले ही बड़ा व ॥ दर वक्तव्य कला में निपुण व्यक्ति ही क्या न मिल जाय तो भी उसका हृदय द्रवित नहीं हो सकता। मोम जैसे हृदय वाला भव—भीरू होता है और पत्थर जैसे हृदय वाला भवाभिनन्दी होता है



कष्ट ही कसौटी

कष्ट में ही मनुष्य की सफलता एवं असफलता का अंदाज निकाला जा सकता है। कष्ट में ही सरलता और वक्रता का ज्ञान होता है। कष्ट आवे उस समय मैदान छोड़ कर भागना नहीं चाहिए। किन्तु उसको श्रम एवं उत्साह से दूर करने का उपाय करना चाहिए। मनुष्य एक है और उसके पीछे कष्ट अनेक हैं। इतना होते हुए भी प्रत्येक कष्ट को दूर करते जाओ और बिना कष्ट का जीवन बिताओ

खींच तान मत करो

बात को अधिक क्यों-बढ़ाते हो ! अधिक खींचने से तो टूट जाती है और टूटने के पश्चात् जोड़ो तो गांठ तो पड़ ही जाती है। यह हर बार खटकती है। इस कारण से मानो जहां जहां बातों की खींच तान हुई वहां भयंकर परिणाम सामने आये है जो कहे नहीं जा सकते हैं। बुद्धिमान और समझदार थोड़े शब्दों में अपना काम बना लेता है। मूर्ख जिन्दगी भर रोता ही रहता है। उचित खींचना लाभदायी है तथा अनुचित खींचने से क्लेश बढ़ता है।



तप का तेज

चन्दन जितना अधिक घिसता है सुगन्ध उतनी अधिक फैलती है। साठे को जितना अधिक मर्दन किया जाता है उतना ही अधिक रस निकलता है और सोने को जितना अधिक तपाया जाता है उतना अधिक तेज प्रकाश वाला बनता है। इसी प्रकार सत्पुरुषों पर जितने अधिक कष्ट आते हैं उतने ही वे शक्ति शाली और प्रतिभावान बनते हैं।

स्थायी क्या है !

मुझे नाम नहीं काम चाहिए। नाम का तो नाश हो जाता है और काम स्थायी रहते हैं। नाम से जो प्रेरणा मिलती है उससे कितनी ही अधिक प्रेरणा काम से मिलती है। नाम का मोह नीचे गिराता है और काम का मोह उन्नति-शील बनाता है। सभी कर्यकर्ताओं से प्रेरणा लेता रहूं और वे मेरा पथ प्रशस्त करते रहें। यही प्रेम मयी भावना जीवन का माधुर्य है।



क्या चाहिए

मनुष्य तुझे सोना प्रिय है अथवा (सोना) आराम करना। यदि तुझे सोना (स्वर्ण) प्रिय है तो फिर सोना तो नहीं मिल-सकता है और यदि सोना (शयन) प्रिय है तो स्वर्ण (सोना) मिलना कठिन है। इसलिए सोने का प्रेम बुरा है नुकसानदायक है जिसने शयन का जितनी मात्रा में त्यागा है उतनी मात्रा में उसने धन प्राप्त किया है जिसने शयन में मोह रक्खा है उसने उतना ही खो दिया है। अत तुम स्वय अपने मन से पूछो कि तुम्हें खोना है अथवा पाना है !

पल की कीमत

एक एक दिन नहीं किन्तु एक एक क्षण का कार्य अपने जीवन को गढ़ता है। ऐसे असख्य क्षणों से अपने चरित्र का निर्माण होता है। इतना ही नहीं इतिहास लिखा जाता है साहित्य का सृजन होता है और अनोखी कला के माध्यम से अनेकों को प्रेरणा मिलती है। यह अपने जीवन के रात दिन अपने सभी को प्रतिक्षण जागृत एवं निर्भिक बनाने का अभूत-पूर्व लाभ देते हैं। इसीलिए प्रतिक्षण मन वचन और काया को उन्नत रखो और परम पद प्राप्त करने के हेतु आगे बढ़ो।



शैतान कौन

मनुष्य सभी प्राणियों में बड़ा है। किन्तु मनुष्य यदि एक दूसरे को मारने लगे, खाने लगे तो उसे इन्सान नहीं कहा जा सकता। उसे हैवान अथवा शैतान ही कहा जावेगा। उसको मानव शब्द से सम्बोधित करना तो मनुष्यता का घोर अपमान है

हठ से बचो

राज हठ बुरी है क्योंकि यदि राजा प्रसन्न हो जाय तो राज दे दे और नाराज हो जाय तो तबाही कर देता है। रज हठ भी बुरी है जिसे बार बार साफ करो तो भी वह चिपकती रहती है। योगी—हठ में अहंभाव रहता है। इसीलिए योग-हठ भी ऐसी ही है। जिस समय जो होने का है उसे कोई टाल नही सकता है। बाल-हठ भी अच्छी नहीं। सिर के बाल भी ऐसे ही हैं साफ करो तो भी पुन तैयार हो जाते हैं। स्त्री-हठ को तो कोई पहुँच नहीं सकता इसी प्रकार मरण हठ भी असाध्य हो जाती है। अत इन हठों से बचने का उपाय करना चाहिये।



एक उत्तम

बुद्धिमान और समझदार एक ही अच्छा जो लाखों को समझदार बना सकता है। नया निर्माण कर सकता है नव चैतन्य का शंख-नाद बना कर कुम्भकर्णी निद्रा में सोने वालों को जगा सकता है। पुस्तकें पढ़ने मात्र से कोई समझदार नहीं बन सकता किन्तु उसके अनुसार जो जीवन को ढाल लेता है वही इस श्रेणी में स्थान पा सकता है।

याद क्या रहना है

तुम कहते हो कि मुझे याद नहीं रहता, मैं भूलता हूँ यह तुम्हारा मानना भूल है। तुम्हें यदि कोई शब्द चुभ गया है तो क्या तुम उसे महीनों याद नहीं नहीं रखते हो? फिर किस आधार पर कहते हो कि मेरी स्मृति घटती जा रही है। यह कहो कि हम राग करते हैं। हमें पसन्द है इसीलिए वह बातें अधिक याद रहती हैं। किन्तु याद रखना कि यह दुःखी बनने का रास्ता है इसे भूल जाओ और वीतराग (विराग) को याद रखो।



पद से दूर रहो

पद लेने में क्या है? बिना पदवी के ही काम करो ना। वास्तव में बिना पदवी के जो काम हो सकता है वह काम पद पर जाने के पश्चात् नहीं हो सकता। पद लेने से जवाबदारी बढ़ती है। बिना पद के भी कार्य हो सकता है। पद से सत्ता अवश्य मिलती है परन्तु पद से दूर रह कर ही पद की शोभा को बढ़ाना चाहिए। पद प्राप्ति के पीछे अपनी शक्ति का अपव्यय नहीं करना चाहिए।

मधुर मीत और हित कर बोलो

बाण जैसे तीखे शब्द उच्चारण करना अच्छा नहीं। यह शब्द निकलते ही आघात करते हैं। यदि बोलना याद है तो ही बोलना चाहिए परन्तु वह मीठा, मित्रतापैदा करने वाला और हित कर होना चाहिए। ज्ञानी मौन रह कर स्वय के काम इशारे मात्र से निकाल लेते हैं। मूर्ख जोर जोर से चिल्लाता है फिर भी वह जो काम करना चाहता है उसमें उसे सफलता नहीं मिलती।



यहाँ पोल नहा चल सकती

अनेक कामों में पोल चलती है उसे छुपाओ तो छुपाई जा सकती है। परन्तु तपस्या और त्याग में जरा भी उसे स्थान नहीं मिल सकता। पैदल चलना, बिना आहार पानी के रहना और बाह्य व आभ्यान्तर तप में स्थिर रहना यह वास्तव में कठिन है, जो इस पथ पर निर्मल भाव से चलता है उसके चरणों में हमेशा मस्तक झुका रहता है। त्याग के बल पर काया को, तप के बल पर मन को और पैदल विहार से स्वास्थ्य पर अंकुश रखा जा सकता है।

गर्व से दूर रहो

मैं बड़ा हूँ, मैं पढ़ा लिखा हूँ, मैं सब कुछ कर सकता हूँ। यह बात मैं तभी तक मान सकता हूँ जहाँ तक मुझसे कोई बड़ा विद्वान न मिले। विशिष्ठ विद्वान से सम्पर्क न हो और मुझ से अधिक महत्वपूर्ण कार्य करने वाला न मिला हो। जब उसके साथ सम्पर्क हो जाता है तभी जान पड़ता है कि अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने की प्रवृत्ति पर भारी दुःख होता है दर्द होता है। अच्छा हो यदि मैं इन प्रवृत्तियों से दूर रहूँ।



प्रमाद से बचो

आहार और निद्रा इन दोनों को घटाना या बढ़ाना यह बात व्यक्ति के हाथ में होती है जो यदि चाहे तो बढ़ा भी सकता है और चाहे तो घटा भी सकता है। इनका परस्पर सम्बन्ध है। आहार शरीर में आलस्य बढ़ाता है और परिणाम में नींद आती है। यहीं से प्रमाद का श्री गणेश शुरू होता है। अतः प्रमाद से बचने के लिए उपर्युक्त दोनों को विचारपूर्वक कम करने की आदत डालो।

जो देता है वही ले सकता है

यदि तुम्हें कुछ चाहिए तो पहले देना सीखो। जो दे सकता है वही ले सकता है और केवल इच्छा रखने वाला कुछ भी नहीं पा सकता एक हाथ से जो देना सीखता है दूसरे हाथ से वह लेना भी सीखता है। पानी को दान करने वाला कुआ कभी खाली नहीं होता और इकट्ठा किया हुआ तो सड जाता है। इसी प्रकार दिया हुआ तो आ जाता है और रखा हुआ भूल जाते हैं। यह ज्ञान मानव जाति को आद्य तीर्थंकर भगवान् आदिनाथ ने स्वय देकर सिखाया।

꧁

गुण ग्राहक बनो

मैं सब कुछ जानता हूँ यह अभिमान मत करो। विद्या दूसरों के अवगुण देखने के लिए नहीं पढी जाती किन्तु अपनी कमजोरी को मिटाने के लिए पढी जाती है। दूसरो की गलती देखने में यदि समय खराब करोगे तो स्वयं का ज्ञान धन बिगड जावेगा। और कभी वह हमें अधेरे में भी भटका सकता है अत इस दुवृत्ति से दूर रह कर गुण के ग्राहक बनो।

प्रेयो मार्ग और श्रेयो मार्ग

प्रेय से प्रेयस ज्ञान मिलने के पश्चात् श्रेय को श्रेष्ठ मार्ग ग्रहण कर लेना चाहिए। जहाँ प्रेय और श्रेय मार्ग का अनुभव हो जाता है वहां आत्मा स्वयं प्रगति की ओर बढ़ जाती है। हेय ज्ञेय और उपादेय को समझने के लिए ही प्रेय और श्रेय दोनों आदरणीय हैं। प्रेय को समझने के पश्चात् श्रेय का समझना सरल है।



अहं नहीं तो संसार नहीं

जहां तक तेरी अन्तरात्मा यह न जान ले कि तेरा मार्ग श्रेष्ठ है वहां तक अहं भाव को छोड़ कर श्रेष्ठ मार्ग की ओर प्रवृति कर। इसके मिले ज्ञान के पश्चात् अहं भाव का नाम निशान नहीं रहता है। जो यह न रहे तो संसार भ्रमण अवरुद्ध हो जाय और नाम शेष रह जाय। जहां तक अन्तर में अहं भाव रहता है वहां तक समझना चाहिए अपन भटक रहे हैं, भूल कर रहे हैं। भूले हुआ को उचित मार्ग पर लगाने वाले हैं परम कृपालु गुरुदेव। इन्हीं शरण में रह कर भ ुतरात्म

ईश्वर कहां है

मनुष्य स्वयं ईश्वर नहीं है किन्तु ईश्वर के प्रकाश से वह पृथक नहीं है। यह बात अक्षर सा सत्य है। जो मनुष्य जागृत हो जाता है और स्वय की जात का ज्ञान प्राप्त कर लेता है वह निःसन्देह भगवान के स्वरूप को प्राप्त कर सकता है। अगर वह पुरुषार्थ करे तो कोई सन्य नहीं है कि वह इन्सान न बन सके जो मनुष्य कर्तव्य को पहिचान कर कफन बांध कर निकल पड़ता है तो उसकी सफलता में कोई दखल नहीं दे सकता है। वह निश्चय पूर्वक विजयमाल पहिन कर ही आता है।

५१

आज्ञा के महत्व को समझो

आज्ञा के अनुसार करते नहीं हो, नियम के अनुसार चलते नहीं हो, योग्यता के अनुसार रहते नहीं हो और देश काल और भाव के अनुसार बोलते नहीं हो। फिर क्यों दलील करते हो कि हमारे लिए सब प्रतिकूल है। ठीक रहो, आज्ञा के महत्व को समझो, आज्ञा पालन करने की क्षमता को रखो और योग्यता के अनुसार व्यवहार रखो फिर देखो अनुकूलता तुम्हारे चरण चूमती है तुम्हें ढूंढती ढूंढती आ पहुँचेगी।

स्वस्थ और स्वच्छ

जिसके घर में कचरा है उसके जीवन में कचरा है और जिसके जीवन में कचरा है उसके समाज में कचरा है और जिस समाज में कचरा है उसका निरन्तर अधःपतन होता है। घर में प्रकाश होता है तो जीवन में भी प्रकाश होता है, और वह कल्याण मार्ग को प्राप्त हो जाता है। घर को स्वच्छ रख कर जीवन साफ और स्वस्थ बनाना सीखना चाहिए यह आत्म गुणों की प्राप्ति और उन्नति का प्रतीक है।



श्रेयस्करी मर्यादा

मनुष्य जैसे जैसे स्वयं की आवश्यकताओं को बढ़ाता जाता है वैसे वैसे उसके सामने अनेक कठिनाइयाँ मुंह फाड़ कर खड़ी हो जाती है। उसकी इच्छा उसे व्याकुल कर रही है। उसकी अनावश्यक आवश्यकताएँ उसे दुःखी बनाती हैं। जितनी अमर्यादा होती है उतनी आपत्ति आती है और जितना मर्यादा में रहो उतना ही आनन्द। संसार में मर्यादा में रहने वाला व्यक्ति ही स्वयं का हित साधन कर सकता है। प्रेरणा मार्ग का पथिक बन जाता है। मर्यादा-पूर्वक जिसका निर्माण होता है वह स्थायी और दृढ़ होता है।

सिद्धि कहाँ मिलती है

जहाँ फूट वहाँ टूट, जहाँ मेल वहाँ सत्र, जहाँ मिलन वहाँ आनन्द, जहाँ भेद वहाँ खेद ? जहाँ एक राग वहाँ विजय, जहाँ अपनी ढपली अपना राग वहाँ हमेशा हार पराजय। एक की आवाज तूती जैसी सब की आवाज प्रभाव कारी।

जहाँ मन वचन और काया की एकता होती है वहीं सिद्धि निकट आती है और जो इसमें भिन्नता हो जाय तो सिद्धि रुक जाती है। द्रव्य और भाव दोनों एक जिसका होता है उसकी ही जीत होती है हमेशा संसार के रंग मंच पर।



अनियमितता ही बीमारी है

नियम में बहुत शक्ति है और अनियमितता में शक्ति का अपव्यय होता है। वर्तमान में सभी बिमारियों का कारण प्राय: अनियमितता ही दिखती है। जरा सी बीमारी भी पसन्द नहीं तो अनियमितता तो बीमारी की जननी है। उसे क्यों प्यार करते हो ? यह अभी तक समझ में नहीं आता है।

अमूर्त कभी बताई ना सकती है

क्या कोई आत्मा को प्रत्यक्ष बता सकता है जो अमूर्त रूप हो। कोई व्यक्ति का कहना है कि तुम बी ए. हो किन्तु प्रत्यक्ष बताओ। तुम जाँघ से यहाँ तक और यहाँ पढ़े हो वह बाहर निकाल कर बताओ तो कोई कोई मूल रूप बता सकता है? जो बता सके तो समझ लेना चाहिए कि इसी प्रकार आत्मा है।

❀

मानव धर्म

मानव धर्म का जिसे ज्ञान नहीं उसका संसार में जीना व्यर्थ है। फिर वह किसी सम्प्रदाय का क्यों न हो धर्म की यही आज्ञा है कि मानव की रक्षा करो। जिस मनुष्य को मनुष्य के प्रति प्रेम न हो उस मनुष्य को धिक्कार है। जिस धर्म में मनुष्य के प्रति आदर भाव नहीं बताया गया है वह धर्म मुर्दा है वह केवल धर्म का कलेवर है। जिस दिल में मानवता का स्थान नहीं वह दिल पत्थर है। उस दिल को दया पात्र समझना चाहिए।

अड़चनों से हताश न होओ

धम का फल तत्काल नहीं मिल सकता है धीरे धीरे ही मिलता है। आम को बोते ही वह तत्काल फल नहीं दे सकता, इसी प्रकार धर्म की आराधना जो अद्वितीय और अचिन्त्य फल प्रद है वह किस प्रकार फल सकती है ? मनुष्य उत्साह में और जोश में धम करने बैठ जाता है किन्तु इच्छा अपूर्ण रह जाती है तब वह हताश होकर बेहोश हो जाता है। हारना नहीं चाहिए, किन्तु बीच में आने वाली बाधाओं को दूर करते हुए स्वय की प्रवृति में लग जाना चाहिए।

卐

कैसे धन की पूजा करना चाहिए

आज सभी धन की पूजा में रत हैं ऐसी लालसा करते हैं कि हमें धन मिल जाय और जो है वह बढ़ता रहे। सच पूछो तो सच्चे धन की पूजा करना चाहिए उसकी वृद्धि करने के प्रयास की प्रतिज्ञा करनी चाहिए जिससे मनुष्य में मानवी गुणा का विकास हो सके। जीवन स्तर ऊँचा उठ और सभी ओर स्नेह वृति में वृद्धि हो।

प्रमाद का दुष्परिणाम

प्रमाद शैतान का घर है, प्रमाद से मनुष्य को उन्माद सूझता है-प्रमाद से आदमी पागल बन जाता है। प्रमाद जहर है—जिसने इस पीया है उसका सर्वनाश हो गया है। प्रमाद यक्ष्म (भस्म) जैसा है। जिसे लग जाता है उसकी समाप्ति हो जाती है। प्रमाद व्यन्तर और प्रेत जैसा है—जिसके दिल और मगज में घुसता है उसकी सुध बुध खतम कर देता है। प्रमाद विवेक हीनता का परिचायक है, जिसके कारण व्यक्ति के विकास पर ताला पड़ जाता है —प्रमाद बिना ब्रेक की गाड़ी जैसा है।



सुधारो या छोड़ो

जो अपनी बात नहीं मानता और अनुशासन हीनता का बर्ताव करता है वह अपना किस प्रकार बन सकता है ? जिस को अपना मानना और उसे प्रोत्साहन देना साप को दूध पिलाने के समान है। ऐसे को या तो सुधार देना चाहिए अन्यथा उसे हमेशा के लिए छोड़ देना चाहिए। अगर नहीं हो सकता है तो स्वयं के नाम को कलंकित करता है और वही दुःख का कारण बनता है।

किसकी कैसी पहिचान

जो हारकर भाग जाता है वह बहादुर नहीं-डॉक्टर के कहने से जो एकबार खाता है वह तपस्वी नहीं। जो स्वय की कला को पसे से बेच देता है वह कलाकार नहीं। गूगा मौन रहता है इतने मात्र से वह मूर्ख नहीं है। समझाने से जो समझ लेता है और स्वय का हठाग्रह छोड़ देता है वह बहादुर कहलाता है। ज्ञानियों के वचन पर विश्वास करके जो एक समय भोजन करता है उसे तपस्वी कहते हैं भाव शुद्धि के हेतु ही जो प्रदर्शन करता है वही सच्चा कलाकार है और समय पर जो बोलता है वही सच्चा समझदार है।



प्रत्येक क्षण का उपयोग करो

भले ही आये हो किन्तु इसकी खुशी तुमको भले ही हो मुझे नहीं है आने के पश्चात् जाने का भूत लगा हुआ है इसलिए मुझे प्रसन्नता नहीं है। मेरे जीवन का एक क्षण पूरा हो गया जिसका क्षण समाप्त हो गया उसकी जिन्दगी का अन्त तो आवेगा ही। मुझे इसका भय है कि जीवन कहीं निरर्थक न चला जाये-प्रत्येक समय इस बात का पूरा विचार रखना चाहिए।

आदत न डालो

सुनो तो सही आदत को क्यों डाला हो ? चलते को ढेइना चाहिए उससे सताया तो यह तुम्हें पछाड़ देगा यह निश्चय जानो । वह तुम्हें उसकी थाय में मोड़ देगा-इसीलिए आदत को शुरू से ही नहीं डालना चाहिए-जो आदत को डाले देता है आदत उसे पछाड़ती है आदत ही व्यसन का रूप धारण कर लेती है ।



त्याग के ग्रहण में विवेक

संसार में आदान आदेय और प्रदान प्रदेय का कार्य अनादि काल से चला आ रहा है । देने योग्य देने में आता है और लेने योग्य लेना चाहिए । अर्थात सब साधारण तौर पर इसका अर्थ यह हुआ कि त्याग करो और ग्रहण करो । जो अनुचित है और अनाचारणीय है उसे तो छोड़ो और जो ग्रहण करने योग्य है उसे ग्रहण करो इसमें क्या छोड़ना और क्या पकड़ना इसके लिए गुरुजनों से सम्पर्क साधकर प्रेरणा लेना चाहिए ।

भला मनुष्य कौन

जाल बिछाना सरल है किन्तु उसको समेटने का काय बहुत मुश्किल है-जाल बिछाने वाला स्वयं जाल में फंस जाता है इसलिए उससे दूर रहना ही हितकारी है। इतना होते हुए भी यदि कोई मूर्ख बनता है तो उससे सतर्क रहना चाहिए। अन्यथा अपनी स्थिति का दूसरे लोग गलत अर्थ लगा कर उसका अनुचित लाभ उठाते हैं। अतः स्वार्थ जन्य लाभ को छोड कर जो परमार्थ में अपनी प्रवृति करता है उसे ही भला आदमी कहा जा सकता है

卐

निष्काम प्रेम

प्रेम प्राणी मात्र के आकर्षण का केन्द्र है। भले ही वह किसी जाति का क्यों न हो। निष्काम प्रेम सबको सब जगह विजय दिलाता है आत्मा का प्रेम निश्छल होता है जहां तक वह विकृत नहीं होता वहां तक वह सच्चे मार्ग का प्रदर्शन करता रहता है विकृत होने के पश्चात् उसकी हालत बिगड़ जाती है। निष्काम प्रेमी कहीं भी जायं तो वह अपने व्यवहार से सभी को अपना बना लेता है।

एक साधे सब सधै

कहावत है कि "एक को साधने से सब सध जाते हैं और सब को साधने बैठते हैं तो सब चला जाता है" यह निश्चित है कि व्यक्ति को हर समय एक वस्तु ही बनाना चाहिए। तब ही वह अपने कार्य को सुन्दर तरीके से पूर्ण कर सकता है जो अनेक स्थानों पर अनेक कामों में नाम कमाने लग जाता है-जीवन की धुरी को वहन करने के लिए जो एक लक्ष्य बना कर चलता है वह अवश्य उत्तीर्ण होता है।



त्याग किसका

तुम त्यागी बने हो कैसे तुम्हारे अन्दर तो काम, क्रोध, लोभ और मान तो ठोस ठोस कर भरा है-आहार में तुम किसी बात का विचार नहीं करते, जो नहीं मिलता है केवल उसी का त्याग करते हो। यह स्थिति तो तिर्यंच के पशु-पक्षियों जैसी है। यदि वृत्ति का त्याग नहीं करते हो तो निश्चय समझना कि तुम्हारा यह त्याग तुमको ही ले डूबेगा।

सज्जनों का सहारा लो

तुम किसी के आश्रित हो ? आश्रय इन्सान बना देता है। खराब आश्रय बदनाम कर देता है। तुम भूल रहे हो और और भूल कर भोले बन रहे हो-ऐसा भोला पन अज्ञानता का सूचक है अज्ञानता नशा लाती है। नशा सज्जनता से दूर कर देता है-तुम्हें वह नीच बना देगा-इसीलिए मेरा कहना यह है कि सज्जन का सहारा पकड़ो।



कचरा हटाओ।

अधिक समय में वस्तु का नाश हो जाता है अच्छी बातें शब्दों में रह जाती है-थोड़े दिन तक उन्हें यदि न सभाली जाये तो उन पर भी कचरा चढ़ जाता है। लोहे पर कीट चढ़ जाता है। परिणाम में स्वयं के स्वरूप में विकृति आ जाती है। कुशल लोहार के प्रयत्न से वह स्वयं का वास्तविक रूप धारण कर लेता है। बराबर इसी प्रकार सैद्धान्तिक बातों में होता है और समर्थ पुण्य पुरुष उसको प्रकाशित करके जन साधारण पर महान उपकार करते हैं।

त्याग तलवार की धार है ।

या तो त्याग मार्ग को पकड़ना नहीं चाहिए और यदि पकड़ लिया तो पकड़ कर रखना चाहिए त्याग का अर्थ केवल वेश का त्याग नहीं बल्कि मानी बातों में त्याग होना चाहिए । अशुभ चिंतन का त्याग, झूठे वचन का त्याग और अप्रशस्त आचरण का त्याग, त्याग का मार्ग खजूर के वृक्ष जैसा है-जो कोई उसके ऊपर चढ़ता है तो परम आनन्द प्राप्त करता है और गिर जाय तो हड्डियाँ टूट जाती है या मर जाता है त्याग मार्ग को अंगीकार करना एक बात है और उसे यथा स्थित निभाना और उसके ऊपर दृढ बन कर चलना दूसरी बात है-इसीलिए पहिले विचार कर लो फिर उस पर पैर रक्खो तलवार की धार पर पैर रखने की शक्ति और तरीका आना चाहिए।

निंदक साथी

मुझे ऐसा साथी नहीं चाहिए जो मेरे पीछे बुराई का प्रचार करता रहता है-मैं तो हूँ ही बुरा किन्तु बार-बार मेरे बुरे गीत गाकर उसकी पवित्र ,जबान दूषित बनी रहे यह मुझे नहीं रूचता है ।

जैसा अन्न वैसा व्यवहार

"जैसा खाय धान वैसी लेवे शान" यह कहावत सच है। तेजो वर्धक तामसी पदार्थ खाने से मनुष्य में आक्रोश क्रोध और तामस प्रकृति की वृद्धि होती है उससे वह स्वयं को भूल जाता है। सात्विक पदार्थ के सेवन से सरलता, सरसता और सात्विक भाव का उदय होता है, जिससे व्यक्ति का व्यक्तित्व चमक उठता है। राजसी पदार्थ खाने से अहं भाव बढ़ता है जिससे व्यक्ति की स्वयं की प्रगति में बाधायें उत्पन्न होती हैं इसलिए जैसा अपने को बनाना है वैसा भोजन करो।



निर्मम और समम

विद्वान को अहंकार नहीं सताता है और जिसमें अहंकार है वह विद्वान नहीं, ज्ञानी निर्मम होता है अज्ञानी समम होता है निर्मम पुरुष पुरुषों की श्रेणी में पहुँचता है और समम अवनति की लाइन में सदा रहता है जैसे बन वैसे निर्मम बनने की प्रवृति ही लाभदायक है।

कर्तव्य का विचार करो

जहां दूसरे सब जाग उठे हैं और चल दिये है वहा कहो तो सही कि अभी तक तुम्हारी नींद नहीं उड़ी ? बताओ तो सही ऐसी छोटी स्पृहा करके ही जीवन बिताओगे या अपनी स्थिति पर विचार करोगे ? बोलो तो सही, कुछ तो कहो ? कौन से तुम करने के काम कर रहे हो या नहीं कर रहे हो या नहीं करने योग्य कर रहे हो ? कभी तो तुम अपने आप को देखो कि अपन किस हालत में हैं, यह प्रश्न सामने है जिस हर व्यक्ति जानता है फिर भी परिणाम में शून्य है इसका कारण ढूंढना चाहिए इसके बिना हम बहुत पीछे रह जावेंगे।



गरीब और अमीर

आने वाला कुछ भी लेकर नहीं जाता है परन्तु यहाँ कुछ देकर ही जाता है गरीब स्वयं की गरीबी की ओर देखता है और अमीर अपनी अमीरी को बनाये रखने में मशगूल है-गरीब गरीबी देकर जाता है और अमीर अमीरी का मान छोड़ कर जाता है परिणाम में दोनो एक जैसे बन जाते हैं।

अलिप्त वृत्ति

मनुष्य तेरा जीवन कीचड़ में कमल के समान होना चाहिए जिससे विपत्ति आने पर भी कभी मानसिक, वाचिक अथवा कायिक क्लेश उत्पन्न न हो पाय। जितना आसक्त रहोगे उतनी ही आपत्तियाँ बढ़ती जावेंगी और सम्पत्ति समाप्त हो जावेगी। सपत्ति की प्राप्ति और विपत्ति से दूर रहने के लिए कमल के समान रहना आवश्यक है कमल भले ही कीचड़ में हो किन्तु सिर तो पानी के ऊपर ही अलिप्त जैसा रहता है। इसी प्रकार सामारिक ममतों में घिर जाने के पश्चात् भी उनसे पृथक रहना हितकारी है और श्रेयस्कर है। जिसने जितनी अलिप्त वृत्ति रखी उसने उतना मगल पद प्राप्त किया है।



सनिष्ठा और सद्भाव

जहाँ तक सम्पूर्ण निष्ठा और सद्भावना जागृत नहीं होती है वहाँ तक कर्तव्य पथ से गिरने में देर नहीं लगती है। इसलिए प्रत्येक काम की सफलता में सनिष्ठा और सदभावना नितान्त आवश्यक है।

श्रेयो मार्ग और प्रेयो मार्ग

मन से मनन और चित्त से चिन्तन करते हुए स्पष्ट ज्ञान पड़ता है कि कौन सा श्रेय मार्ग है और कौन सा प्रेय मार्ग है ? उसका ज्ञान परिशीलन हो जाता है कि किस प्रकार की प्रवृत्ति को अपनाना चाहिए ? मन का धन है श्रेयस्कर पथ का परिज्ञान। चित्त का धन है श्रेयो मार्ग का परिशीलन और शरीर की श्रेष्ठ प्रवृत्ति है अनुशीलन जिसका मन मद्गुण वृति को छोड़कर मनन की ओर प्रवृत्त होता है जिसका चित्त चंचल वृति को छोड़कर चिन्तन की तरफ लग जाता है और जिसका शरीर परिपूर्ण रूप से लोक सम्मत प्रवृत्ति में प्रवृत्त रहता है वही मनुष्य इस संसार में उत्तम समझा जाता है।

ॐ

समझदार कौन

स्थावर जीव वनस्पति काय जो सब जीवों को ठंडी छाँया देकर शान्ति दे सकते हैं तो क्या तू चलता फिरता समझदार मनुष्य किसी को सहारा नहीं दे सकता यह कितना विचारणीय है ?

मूल की मडान को दूर करो

छत विक्षत घर में कौन रह सकता है ? टूटे हुए मकान को कौन पसद करता है ? कोई भी पसन्द नहीं करता। इसी प्रकार शिथिलता से क्षत विक्षत अपने को कौन चाह सकता है ? अपनी अवग कौन माने कोई नहीं अपने पत्तों पर कितना ही रग लगावें किन्तु मूल में जो मडान लग रही है-आग लग रही है है उसको तुरन्त सभाल कर व्यवस्थित करना चाहिए। अन्यथा अपनी आज जैसी स्थिति कल कैसे रह सकती है ? यह एक विचारणीय प्रश्न है ?



ज्ञाति भाइयों के साथ सहयोग रक्खो

कोने जैसा स्वय ज्ञाति भाइया को भुलाकर और सबके बीच में बैठकर सबका भाग बना कर फिर खाना पसद करता है तो मनुष्य जैसे मुख्य इस गुण को न अपनावे, तथा इससे दूर रहता है यह कितना विचार[illegible] है ? स्वयं के ज्ञाति भाइया के प्रति यदि [illegible] सदभाव और सहयोग का भाव मनुष्य में न[illegible] है [illegible] वह स्वय उच्च स्तर से निम्न स्तर पर आ जाता है [illegible] वहाँ मानवता की मृत्यु हो जाती है।

मुठ्ठी और फैलाये हुए हाथ

मनुष्य आता है मुठ्ठी बन्द करके जो कोई इसको खोलता है वह फिर उसे बन्द कर देता है मानो कोई बहुमूल्य छिपाने की वस्तु लेकर आया हो । यह सच है कि वह उसकी मुठ्ठी में पुण्य और पाप छुपा कर लाया है। परन्तु जो लाया है उसका उपयोग यहाँ पर करने और आगे की तैयारी करना भूल जावे तो फिर खाली हाथ लम्बे करके जाना पड़ता है । ऐसा मालूम पड़ता है कि किसी के पास से याचना करते हुए जा रहा है।

卐

बनाना और बिगाड़ना

बनाना जितना कठिन है बिगाड़ना उतना ही सरल है । जीवन बनाने के लिए है बिगाड़ने के लिए नहीं। निर्माण के लिए है। मिट्टी में मिलाने के लिए नहीं । दुःख है कि आज का मनुष्य बनाना भूल गया है और बिगाड़ना सीख गया है । इसलिए आपत्तियों का शिकार बन गया है बनाने के लिए प्रयत्न करना चाहिए बिगाड़ने में तो कुछ नहीं लगता इसि[illegible] पग पर अमृत बहता रहे इसका [illegible]

प्रकृति और व्यवहार

प्रकृति और पुरुष यह दोनों एक दूसरे के सहयोगी हैं जहां तक इन दोनों की समतुला बराबर रहती है वहाँ तक मनुष्य इस संसार में चाहे सो कर सकता है किन्तु जहाँ मनुष्य प्रकृति के प्रतिकूल हुआ कि तुरन्त ही यह मानवी ढाँचा खराब होते देर नहीं लगती, प्रकृति के अनुकूल रहने का अर्थ है स्वयं अपनी इच्छा के अनुसार काम चलावे। पिता की इच्छा के अनुसार यदि पुत्र नहीं करता है तो पिता बाध्य होकर उसे दूर करने की कोशिश करता है। इसी प्रकार यदि प्रकृति के प्रतिकूल रहे तो प्रकृति स्वयं पुरुष से अपना सम्बन्ध तोड़ने देर नहीं करता है।

सज्जन और दुर्जन

सज्जन इशारे में समझ जाता है और दुर्जन मार पीट करने के पश्चात् भी नहीं समझता है। इन्सान कम बोलता है और अधिक करता है। शैतान खूब बोलता है और करता कम है। हैवान चिल्लाया करता है और स्वयं की फजीती करता है ज्ञानी हृदय में विचार करता है और बिना बोले ही कर डालता है।

निवृत्ति मूलक प्रवृत्ति

मन, वचन और काया से यह मालूम हो चुका है कि मेरी अविरत प्रवृत्ति से ही मेरा नुकसान हो रहा है। प्रवृत्ति मार्ग से मैं परहित के सुन्दर कार्यों का विचार करता रहता हूँ परन्तु यह मुझे विफल रही है बस अब सभी प्रवृत्तियों के ऊपर अंकुश रखना पड़ेगा जिसमें निवृत्ति की गंध रहेगी उसी प्रवृत्ति की ओर ही पैर रखा जावेगा-निर्णय कर लिया है और इसे कार्य रूप में परिणित करने का प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिया है। देव गुरु और धर्म का बल मुझे अपने ध्येय में सफल बनाने के लिए अपूर्व सहाय देंगे।

卐

चंचलता और स्थिरता

जहाँ तक स्थिरता नहीं होती है वहाँ तक कार्य सम्पन्न होने में अवश्य विलम्ब होता है। शक्ति का केन्द्रीकरण न होने के कारण और अस्थिर दिमाग के कारण उसका भिन्न भिन्न धाराओं में बहाव होता है - मन की चंचल गति है उसको स्थिर करके अपने मार्ग पर आगे बढ़ो।

उदारता को समझो

मैं उदारता का समर्थन करता हूँ-इसका अर्थ यह नहीं है कि कोई उड़ाऊ बन जाये मैं सत्य वादियों का समर्थक हूँ किन्तु स्वयं का जिसमें लाभ हो और अन्यों को हानि पहुँचे यह बात मुझे पसंद नहीं बात करना मुझे अवश्य पसंद है मैं काम को चहता हूँ परन्तु यह काम अवश्य होना चाहिए-जिससे अनेकों को लाभ मिलना चाहिए। मैं अधिक बोलना नहीं चाहता परन्तु इससे किसी को यह नहीं समझना चाहिए कि मैं गूंगा हूँ।



बल और कल

जो कार्य कल से हो सकता है वह कार्य बल से कदापि नहीं हो सकता है। कलावान के सम्मुख बलवान को पराजित होना पड़ता है। बल शरीर का होता है, कल और कला क्रमशः बढ़ती जाती है। बलवान को भय रहता है यहाँ कल वाल और कला वान को भय नहीं सता सकता शारीरिक बल से अहं उत्पन्न होता है और बौद्धिक बल से शांति प्राप्त हो सकती है।

मौज मजा और परिणाम

समस्त संसार शांत चित्त से मौज मजे में पूरा समय नष्ट कर रहा है। मौज मजे के पश्चात् यमराज की फौज के इसे कितने डंडे पड़ेंगे इसकी इसे खबर नहीं भगवान का भय रखे बिना चाहे जिस प्रकार से स्वय के सुख में लीन रहे परन्तु काल रात आयु निकाल कर वह सब ले रहा है। किसको किस समय अपने पंजे में भर लेगा और घड़ी के छट्टे भाग में था या नहीं था कर दे तो इसको कोई कह सकता है कोई नहीं—अंध में यदि कोई लूट ले तो उसका दुःख होता है किन्तु जागृत अवस्था में हाथों हाथ ले जो डाला नहीं है उसे मनुष्य को धर्म मार्ग पर चलता जान कर कालराज स्वय उससे कांपने लगता है।

ॐ

स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता

स्वतन्त्र रहो और स्वतन्त्र विचार धारा भले ही रक्खो किन्तु स्वच्छन्द न बनो-संसार में स्वतन्त्रता की अपेक्षा स्वच्छन्दता बढ़ती जा रही है और इसी कारण जन साधारण उसकी गहराई में डूब रहा है

पुराना और नया

सच में लकीर का फकीर बनना ठीक नहीं क्योंकि वह है किन्तु तभी तक कि जब तक लकीर है—सीधा है-ऐसा समझ में आ जाय नये जमाने के लोग पुराने जमाने लोगों का आलोचना करते हैं और ये पुराने जमाने के लोग नये विचार वालों को ठीक नहीं मानते। यह क्यों है इसका विचार करो या तो आलोचना करने वाले उसे समझ नहीं सके अथवा ठीक नहीं मानने वालों ने उनको समझाने की कोशिश नहीं की इसी कारण कोई वास्तविक स्थिति नहीं पा सकता। पुराना सभी आलोचना के लिए नहीं है नया सभी अपनाने के लिए नहीं है। नये पुराने का संगम (देश, काल और भाव को देख कर) समिश्रण ठीक होता है और वही आचरण सब प्रकार से समुन्नति का कारण बनता है।

卐

तुच्छता और गम्भीरता

जिसमें गम्भीरता है वह समुद्र के समान है और जिसमें तुच्छता है वह तालाब जैसा है, गम्भीर उच्च श्रेणी का अधिकारी होता है तथा तुच्छ अवनति की ओर जाता है।

स्व कल्याण

दर्शन के बिना मुक्ति नहीं ज्ञान बिना मुक्ति नहीं और चारित्र के बिना शक्ति नहीं । सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र के त्रिवेणी सगम के बिना आत्म सिद्धि नहीं हो सकती-जिसमें इन तीनों का सगम हो गया वह आत्मा सच में स्वय का सब प्रकार से कल्याण कर सकती है ।

卐

स्वर्ग और सांकल

स्वयं का कार्य स्वय को ही करना चाहिए तेरा काम दूसरों से कराने में तुझे शर्म आना चाहिए । प्रेम और भय के कारण कोई काम कर देता है परन्तु इससे क्रमशः पतन ही होने वाला है और तेरे जीवन में हमेशा शिथिलता ही बढ़ती जावेगी पुद्गल पराया है, दूसरे का है, उसके आराम के लिए तू ऐसा परावलम्बी बन जाता है कि जो कुछ करने में आता है उसमें प्रमाद और स्वय का स्थान जमा लेता है तो फिर जिन्दगी का आनन्द पर क्या रहेगा । छोटे से छोटा साधारण काम भी तुझे स्वय को करना चाहिए तब ही तेरे लिए यहां स्वर्गीय सुख मिल सकता है परावलम्बी हो जावेगा तो तू स्वय ही कषायों की चौकड़ी के चक्कर में फँस जावेगा और कठिनाइयों की कठोर सॉकल में बँध जावेगा ।

राग और विराग

राग का आनन्द क्षणिक होता है दुःख कारक होता है। विराग का आनन्द स्थायी और सुख कारक होता है राग में सभी लांछन हैं और विराग में सभी विचार रहते हैं-राग का रंग फीका और बेडौल होता है राग का रोगी बंधन में बंधता है-विराग का रोगी मुक्ति की तरफ बढ़ता जाता है। राग का रोगी स्वार्थ मात्र ही साधता है जो अशांति कारक है। विराग का रोगी परमार्थ और स्वार्थ दोनों को साधता है जो परम शांति कारक है।



आचार और अनाचार

किसी के साथ निरर्थक झगड़ा करना यह उत्कृष्ट अनाचार है आचार की मर्यादा है प्रेम स्नेह और सहचार की भावना को जीवित रखना इसके विपरीत अनाचार है। आचार में, शैथिल्य में अतिचार मर्यादा का उलंघन अनाचार है। अतिचार दूषण है जो प्रायश्चित के साबुन से साफ किये जा सकते हैं परन्तु अनाचार का प्रतिफल भोगना पड़ता है विचार पूर्वक जो किया जाय वह आचार आचरण। अविचार से करने में आवे वही अनाचार, अनार्याचरण।

दृष्टि कैसी होना चाहिए

जो सब का बन सकता है वही मुद का बन सकता है और जो स्वय का करता है वही सब का कर सकता है स्वय को जाने बिना सत्व को मान बिना, और दूसरा को परखे बिना कोई जीव किसी समय श्रेय को नहीं साध सका, साध नहीं सकता है, और साध नहीं सकेगा। स्वय को जानने के लिए सरल दृष्टि होना चाहिए, सत्व को जानने के लिए अनेकात दृष्टि होना चाहिए और दूसरों को परखने के लिए अतिसवादी दृष्टि होना चाहिए।



स्वार्थी और परमार्थी

दोस्ती मीठी जवाबदारी है—जिसको निभाना प्रत्येक का कर्त्तव्य है। स्वार्थी दोस्त स्वय को और दूसरों को दोना को ले डूबता है। परार्थ परायण व्यक्ति स्वय का भला करता है और दूसरों को हानि न पहुँचे इसका पूरा ख्याल रखता है और नि स्वार्थी परार्थ परायण मित्र स्वय का खोकर भी दूसरों का हित चिंतन करता है। जिसके हृदय में हित बसा है वह जगत में जीव मात्र का बन्धु बन जाता है जो स्वार्थी होता है वह दानव है और जो परार्थी होता है वही मानव है।

शिष्ट और अशिष्ट कार्यों का फल

कार्य को सुधारना और बिगाड़ना यह व्यक्ति के स्वय के ऊपर है उसके पास जहर भी है और अमृत भी है। वह मरना चाहे तो जहर है और अमर होना चाहे तो अमृत है उसके सुन्दर काय कलाप अमर बनते हैं और अशिष्ट काय कलाप बुरे बनते हैं। इसलिए शिष्टाचरण, शिष्टवचन और शिष्ट चिंतन मनन रखना चाहिए।



श्रमण तपोधन

हे साधु। तेरा जीवन सभी के लिए आकर्षण का विषय है। इसलिए तू त्याग मय जीवन व्यतीत करते हुए परम आदर्श स्थापित करता है तुझमें भूख सहन करने की शक्ति है। तुझ में प्यास सहन करने की शक्ति है। तू प्रत्येक प्रतिकूल समय को अनुकूल बना सकता है। तू तपोधन है। तुझे तेरे तप धर्म के द्वारा तपोधन की स्थिति को स्थिर करना चाहिए। तुझे श्रमण के शुभ सम्बोधन से बोला जाता है तु इसका हर समय विचार कर जिसमे तेरा प्रयास सफल बन जावे।

श्रमण तू कौन है

हे साधो ! तू क्षमा की मूर्ति है, दया का समुद्र है और शान्ति का भंडार है। तेरे मन में क्षमा ही स्थान रखती है तेरे घट में दयार्द्रता ही टपकती रहनी चाहिए और तेरे काया मंदिर में शान्ति ही रह सकती है। तुममें गर्मी नहीं आना चाहिए, अशान्ति तुमको नहीं सताना चाहिए, निर्दयता स्वप्न में तुझे नहीं दिखना चाहिए ज्ञान का तू सागर है, ध्यान तू आकर है आराधना का तू यशस्वी साधक है, तू ही संयम का साक्षात् प्रमाण है, तुमको स्वयं का ख्याल रखना चाहिए, तेरे पैर कीचड़ में नहीं फसना चाहिए।

卐

अभिमान बड़ा दोष है

मान यह मनुष्य का बड़े से बड़ा दोष है यह जहाँ तक हृदय में बसा हुआ है वहां तक मनुष्य भले ही बड़ेपन में माना जाता हो किन्तु ज्ञानी तो उसे खोटा ही कहेंगे। क्योंकि इसकी हाजरी में दूसरे सद्गुण तथा देव गुरु और धर्म की भक्ति या आराधना फलती ही नहीं है।

न्यायी व्यवहार

शास्त्रकारों ने गृहस्थ का पहला गुण न्याय सम्पन्न वैभव कहा है। उसका पूरी तरह से पालन करना यही गृहस्थाश्रम को सुखी बनाने का साधन है। अन्याय करने से अधर्म का भार बढ़ता है समाज में अविश्वास जमता है और व्यवहार में प्रतिष्ठा समाप्त हो जाती है। राज्य शासन के अनेकों प्रकार के आक्षेपों को सहन करना पड़ता है और अन्त में प्रतिष्ठा सम्पन्न तन, धन जन और बल से परिवेष्ठित व्यक्ति को चारों ओर से यातना सहन करना पड़ती है। जो स्वयं के मन वाणी और शरीर का व्यापार न्यायी रखे वही व्यक्ति सर्वगुण सम्पन्न बन जाता है।

卐

लोकोत्तर सम्बन्धी

अरिहंत लोकोत्तर सम्बन्धी है। इससे सम्बन्ध स्थापित करने के लिए लौकिक सम्बन्धों की रागान्धता का त्याग करना आवश्यक है। लौकिक से पीछे हटना पड़ता है क्योंकि जब कनेक्शन बदलता है तब ही करंट मिल सकता है।

अभव्य और भव्य

अभव्य ससार में घूमता रहता है और भव्य भाव में ही रमण करता है। आसन्न भव्य स्वभाव में ही निमग्न रहता है आत्मी ससार में भ्रमण करती है दुखी भाव में रहती है और महासुखी स्वभाव में आसक्त रहती है। अधर्मी अभव्य, धर्म भव्य और आत्मधर्मी आसन्न भव्य परमात्मा के निकट रहने वाला भव्य भाही परमात्मा बन जाने वाला स्वभाव में रमण करता है।



ज्ञानी और समदृष्टि

ज्ञानियों की दृष्टि उदार होती है उनका व्यवहार शुद्ध होता है उनकी वाणी हित, मित और पथ्य कारी होती है। ज्ञानी न स्वयं के ज्ञान में समष्टी को एक सरीखा देखा है स्वार्थ के बजाय परमार्थ की दृष्टि का परम तेज प्रकाशित होता है और उसी प्रकाश म निजानन्दी बनने का श्रेय उससे प्राप्त होता है।

कन्ट्रोल और आराधना

इन्द्रियों पर नियन्त्रण करने में आता है तब ही सच्चा स्मरण हो सकता है अन्यथा इन्द्रियों का व्यापार पृथक होता है और भावेन्द्रिय पृथक मार्ग पर ही घूम फिरती है। अतः सर्वप्रथम इनके ऊपर अंकुश रखना परम आवश्यक है। श्रोत्रेन्द्रिय का विषय सुनना है। अरिहन्त के वचनों को एकाग्र होकर सुनने के लिए कान को अन्य तरफ से अरिहन्त की तरफ घुमाने में आवे तो ही अरिहन्त की आराधना हो सकती है।

卐

अहम भाव का रोग

जो अपने आप को बड़ा दिखाने का ढोंग करता है वह थोड़े समय के पश्चात ही खोटा दिखने लगता है। जो छोटे पन को रखते हुए सहन शील होता है तो प्रभुता स्वयं हृदय में ही नहीं बल्कि सारे विश्व में आ जाती है। अहम भाव का रोग बहुत बढ़ता जा रहा है यह उन्नति की निशानी नहीं है।

प्रायश्चित और पश्चाताप

प्रायश्चित और पश्चाताप इन दोनों शब्दों से यही ध्वनि निकलती है कि परम्परा से जिस प्रकार चित्त शुद्ध रह सकता है उस प्रकार रक्खो । उसकी पुनरावृत्ति मत होने दो । कार्य होने के पश्चात यदि दुःखद दिखाई दे अथवा अनुचित दिखे तो उसके लिये जो कुछ समुचित विधान है उसे आचरण में उतारो उसे ही प्रायश्चित कहा जाता है । स्वयं के अज्ञान के कारण जो कुछ हुआ है उसका पश्चाताप करते हुए प्रायश्चित करना चाहिए ।

卐

स्व कर्तव्य

पर कल्याण का कामी होना चाहिए परन्तु पर कर्तव्य के कामी कभी भी नहीं होना चाहिए । पर कर्तव्य का अस्तित्व नहीं होता है ऐसा नहीं । किन्तु दूसरों में कर्ता का आरोप करके स्वयं के कर्तव्य को गौण कर देना यह कभी भी इष्ट नहीं हो सकता । स्वयं में कर्तव्य को स्वीकार करने से शान्ति सुखि बना जा सकता है दूसरों के कर्तव्य स्थापने से प्रमाद दशा बढ़ती है ।

तपश्चरण और औषधी

तपस्या करनी चाहिए-तपस्या एक ऐसी रामबाण औषधि है कि निकाचित कर्मों के ज्वर को समाप्त करके नीरोग दशा को प्राप्त करा सकती है। परन्तु इसके लिए पथ्य बहुत रखना पड़ता है। गर्म औषधि खाओ तो ठंडी चीजें इतनी ही खा सकते हो जिसके कारण दवा गर्मी न कर सके अन्यथा स्वास्थ्य बिगड़ जाता है। इसी प्रकार तपस्या अत्यन्त गर्म औषधि है उसकी शान्ति के लिए समता भाव रूपी ठंडक सेवन करने में नहीं आवे तो वही बलवा बिगाड़ देती है। अनुभवियों का कहना है कि गरम दवा लेते समय पुष्ट ठंडी वस्तु अवश्य रखना।



महा-मानव

सद् विचारों को प्राप्त करने के लिए परम श्रेष्ठ परमेष्ठियों का ध्यान रामबाण औषधि है। इसमें जिसका मन लग जाता है उसको अशुभ कर्म या बुरे विचार आने में भी भय का अनुभव होता है। इतनी अमूर्त विशाल शक्ति का स्वामी महामानव की भाँति ही पूजा जाता है।

परमेष्ठि शरण

तैयारी करो सर्व स्वार्पण की और फिर आओ परमेष्ठि के शरण में, आदर करो इनके चरण को, इनका ध्यान धरो, और इनके गान गाओ, सभी सरल, सफल और सरस होगा परन्तु सबस पहिले भावना प्रबल होनी चाहिए। जो आज लेना हो तो आज तैयार है इन परमेष्ठि भगवंतो की शरण। मन को दृढ करो और इन्द्रिया पर अंकुश रक्खो यह सब करने क लिए पहिले अन्तर्वीर्य शक्ति को प्रकट करना आवश्यक है। उसके पश्चात सभी यन्त्रवत् होता रहता है।

५१

अरिहंत के उपासक

अरिहन्त को जानना याने सारे विश्व में अपना पन देखना और स्वय में पूर्ण विश्व का दर्शन करना इतना विराट रूप बने तब ही स्वय में तन्मयता आ सकती है क्यों कि अन्तर दृष्टि में अरिहंत लोकव्यापी है अत अरिहंत के उपासकों को स्वय की बात को असीम बनाना चाहिए।

सच्चा साथी

अन्य जनों का साथ अधिक से अधिक शान के वहाँ तक रहता है किन्तु परमेष्ठिओं का साथ हर स्थान के लिए हमेशा के लिए होता है जिसका साथ हमेशा हमेशा रहता है वही सच्चा सम्बन्धी होता है और विपत्ति के मार्ग से बचकर सम्पत्ति के मार्ग पर जाता है। आपत्तियाँ उससे दूर भागती है। परमेष्ठियों से जो दूर भागता है वह सकटों के समीप जाता है। परमेष्ठियों की प्रीती हमेशा के लिए और सदाकाल तक रहती है किन्तु प्रीती करना आना चाहिए।

卐

शान्ति का उपाय

मिले उसमे प्रसन्न न होवो और उसका खेद न हो परन्तु आत्मस्वभाव का ही मात्र चिंतन करते रहना यही परम शान्ति का श्रेष्ठ उपाय है। जो जाता है वह अपना नहीं। अपना है वह जा नहीं सकता जाने वाला मिले और जाने वाला जाये इसमें ऊहा पोह नही करना चाहिए। स्वय की स्थिति में चचलता न हो यही साधक की साधना की सिद्धि का द्योतक है।

विचार और वातावरण

जैसा वातावरण दिखाई देता है वैसे विचार उत्पन्न रहते हैं, किन्तु उत्पन्न हुए विचारों में स्थिरता लाना यही जिन्दगी की सच्ची सफलता है। सद्-विचारों को स्थिर करके अन्य विचारों को बाहर निकाल दो। इसी में स्वाभाविक वैचारिक स्थिरता में मेल बैठ सकता है। निश्चल हो तब ही यह काम हो सकता है, छोकरों का खेल नहीं कि तुरन्त हो जाय। जो जीवन को उन्नत करना है जन्म ने का यश लेना है तो इस रास्ते को पकड़े बिना छुट्टी नहीं मिल सकती।

卐

परमेष्ठिओं का सम्बन्ध

जो सब ही का बन सके वही परमेष्ठिओं की सच्ची उपासना कर सकता है। स्वयं के स्वार्थ में रहने वाला कभी भी इन पूज्यवरों की आराधना नहीं कर सकता, सभी का बन सके तभी सच्ची मैत्री भावना का उदय होता है। मैत्री भावना के बिना यह आत्मा परमेष्ठिओं से सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकती है।

सगा कौन

क्या कभी कोई किसी के कठिन समय में सगा बन कर रहा है क्या ? जो नहीं हुआ तो फिर भगवान (देव, गुरु) और धर्म के सगे क्या नहीं बन जाते हो ? इन पर कल्याण के पवित्र पंथ पर क्या नहीं चलते हो ? किसी के जाने से कोई दुःखी होता ही नहीं। जो होता हो वह केवल बाहरी दिखावा है। जन्म लिया और बाल्यकाल में ही मर गये होते तो कौन दुःखी होता और कौन चिन्ता करता।



प्रकृति और विकृति

प्रकृति पानी जैसी होनी चाहिए जिस रंग में मिलाओ उस रंग में मिल जाय किन्तु स्वयं की स्थिति और स्वभाव को न छोड़े। कोई के साथ झगड़ा करने की प्रकृति शैतान की होती है, कोई को सताने की प्रकृति हैवान की होती है, सबको प्रसन्न रखने की प्रकृति इन्सान की होती है, सभी का कल्याण करने की प्रकृति भगवान की होती है। जिसकी प्रकृति विकृत हो जाती है उसका जीवन विकृत बन जाता है विकृति से बचने के लिए प्रकृति को अच्छी रखना यही श्रेयस्कर है।

वाचालता या विद्वत्ता

सब कुछ जानता हुआ भी उस का प्रेमी, उसी में प्रसन्नता का अनुभव करता है। ज्ञानी कहते हैं कि यह उसकी जानकारी नहीं किन्तु अज्ञानी दशा है—ऊँची ऊँची बातें करने का आदि हो गया है और उसी में अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन करता है। ज्ञानी उन्हें विद्वान नहीं बल्कि उसे वाचाल और बहुत बात करने वाला कहते हैं ऊँची दुकान और फीके पकवान जैसी उसकी स्थिति होती है जिसके अन्दर कुछ नहीं होता है जिसके आचरण में अंश भी नहीं होता।

सफलता या विफलता का आधार

महासागर में गोता लगाने वाला प्रयत्न कर के रत्न प्राप्त कर सकता है किन्तु बिना भाग्य वाले को कंकर भी हाथ नहीं लगते हैं। प्रत्येक मनुष्य को प्रयत्न, पुरुषार्थ और प्रक्रिया ऐसी करनी चाहिए कि जिससे उसके हाथ में रत्न आ सके। सफलता और विफलता तथा भाग्य का निर्माण यह सभी मनुष्य की प्रक्रिया पर निर्भर है, ज्ञानियों की संगति से उसे समझना चाहिए और उसके अनुसार चलना यही उसकी सफलता का द्योतक है।

भय और निर्भय

सब की पहिचान होते हुए भी यदि परमेष्ठी भगवंतों की पहिचान नहीं हुई तो सभी पहिचान व्यर्थ है । चक्र में डालने वाली है एक म्यान में एक ही तलवार रह सकती है—दो कभी नहीं रह सकती—एक हृदय में एक का ही स्थान हो सकता है । कहाँ संसार और उसके पोषक तत्व और कहा परमेष्ठी और उनके गुणों की गरिमा जिसके हृदय में संसारी को स्थान होता है वहा भव वृद्धि और पीछे भी भय रहता है जहाँ परमेष्ठी को स्थान होता है वहाँ हमेंशा भाव वृद्धि ओर से होती है, निर्भय दशा ।



प्रवृति और निवृति का पथ

प्रवृति मूलक निवृति घातक है, निवृति मूलक प्रवृति उद्धारक है, निवृति सुखद होती है, प्रवृति मूलक प्रवृति में अहम् रहता है, निवृति मूलक प्रवृति में सोहम् रहता है, सोहम की भाव भावोत्पादक होती है भाव शान्ति प्रदायक होता है विचार इधर उधर ले जा सकते हैं ।

घोड़ा और लगाम

मन स्वय के स्वभाव के अनुसार चचल होता रहता है एक क्षण में यह आकाश और पाताल का माप कर सकता है । उत्तर दक्षिण और पूर्व पश्चिम का किनारा देखने दौड़ता है यह भले ही जाय किन्तु इसे पीछा फिरना आना चाहिए । घोड़ा भले ही भागने की हिम्मत करे परन्तु सवार योग्य और लगाम दृढ़ पकड़ने वाला होना चाहिए । अपने मन की लगाम भी अपने हाथ में होना चाहिए । यह तभी हो सकता है जब परमेष्ठिओं को तत्व रूप से पहिचान कर उसके ही बन जाय । इतना होते ही सुषुप्त शक्तियों का समुदाय मानसिक धुरे को अवश्य बदल सकता है ।

卐

तब ही भव के भुनके

अनेक निराधार जीव इस ससार में भ्रमण करते ही रहते हैं । इनके लिए एक मात्र आधार अरिहत ही है । इसके प्रति सनिष्ठा जागे तब ही ससार का भ्रमण छूट सकता है । सच्चा पूज्य भाव जब हृदय में प्रकट होता है तब ही स्वदश की ओर आगधक के पैर पड़ते हैं ।

ग्राम्य और नगरीय शान्ति

खुली हवा प्रकृति का सुन्दर दृश्य और आम्रवन की सघन झाड़ी के बीच वट कर फिर संसार में चलने वाली प्रत्येक चहल पहल का विचार करने हुए आत्मा को आनन्द की अनुभूति होती है। जहाँ तो यहाँ की आरामें अशान्ति और धमाल भरा जीवन और कहाँ हरियाली से आच्छादित शान्तिमय जीवन का आनन्द ! ग्राम्य जीवन सतोषप्रद होता है तथा शहरी और नगरीय जीवन अशान्तिप्रद होता है। इसका अनुभव भुक्त भोगी ही कर सकता है

卐

भय को आमन्त्रण

एक मारक औषधि दूसरी औषधि से समाप्त हो जाती है ऐसी सभी वस्तुएँ यहाँ पर विद्यमान है जहर जीवन का अंत कर सकता है किंतु अमृत जहर का भी अन्त कर सकता है अधकार हर एक को भटकाता है किंतु प्रकाश अधकार को हटा देता है। कर्म आत्मा को भटकाते है किंतु इन कर्मों को हटाने वाले परमेष्ठी मे थोड़ी भी अलग रहना भय को निमन्त्रण देना है।

पूर्ण और अर्ध

अभ्यास का अजीर्ण बहुत बुरा होता है अन्न का अजीर्ण तो दूर हो सकता है किंतु अभ्यास का अजीर्ण कभी भी दूर नहीं हो सकता इसी कारण मनुष्य पथ भ्रष्ट बन जाता है। सन्तो का लक्षण है स्वयं की भूल को ढूंढना तथ दुर्जन का लक्षण है दूसरा की भूल को ढूंढना। सन्तो का स्वभाव हंस जैसा होता है और दुर्जन का स्वभाव कौवे जैसा होता है- सन्त भरे हुए घड़े के समान गम्भीर होता है किन्तु दुर्जन अध भरे हुए घड़े की तरह छलकता है और सहन नहीं कर सकता।



विकार और विचार

परमेष्ठि की शरण में जाने के लिए मानसिक एकाग्रता और निरन्तर का निराम जरूरी है । मानसिक चपलता और विकारो की आवक सब कुछ बिगाड़ देती है। जब विकार बढ़ते हैं तो विचार भी विकृत हो जाते हैं और परिणाम में वाणी व्यवहार में भी विकृति आ जाती है । जिसके कारण से क्रिया तथा जप ,तपस्या आदि का यथावत परिणाम नहीं मिलता।

सहयोगी और साधना

योग्य साथी के अभाव में अशान्ति और कटु फल का अनुभव करना पड़ता है। फिर वह गृहस्थ हो अथवा साधु गृहस्थ का गृहस्थाश्रम नरक बन जाता है और साधु की साधुता क्लेश मय बन जाती है। गृहस्थ रो कर उसे भुगतता है साधु उसे पूर्व का सञ्चित मान कर हँस कर उसे सहन कर लेता है। तो भी साधु जीवन में योग्य साथी की साधना होना नितान्त आवश्यक है जो स्वयं का और साथी की साधना का मन, वचन और काया की त्रिवेणी से शुद्ध कर सके ऐसे उपर्युक्त सहयोगी के बिना साधु जीवन सुन्दर होते भी अधिक दुःखद हो जाता है।

卐

विचार और विकास

विचारों पर विकास निर्भर है। सदविचार विकास के पवित्र पथ पर प्रयाण करवाते हैं और दुर्विचार विलास और विनाश की भयंकर कन्दराओं में घुमेड़ देते हैं। विकास के मार्ग पर मन का अमन रहा हुआ है और विनाश में भवान्तर की भयानकता ही दिखाई देती है।

अरिहंत और स्वदेश

अरिहंत पद कर आगे बढ़ते हुए स्वदेश की ओर जाना चाहिए, स्वदेश के लोगों को स्वदेश जाने के हेतु ही स्वदेश गये हुए परमात्मा भगवंतों ने हर एक प्रकार से परदेश में होने वाली कठिनाइयों का चित्र खड़ा किया है। स्वदेश का नाम ही ऐसा है कि पथिक के हृदय में बस जाता है। परन्तु परदेश की इतना और स्वदेश भावना जागे तब ही अरिहंत की आराधना शक्य है।

इसमें तेरा क्या



लोग तेरी वाह-वाह से जय जय कार करें इससे तुझे क्या? दिन रात लाड़ी, गाड़ी और वाड़ी के पीछे दौड़ दौड़ इकट्ठा किया इसमें तेरा क्या? बहुत बड़े बंगले बाग और मखमल की शय्या पर सोये पर इसमें तेरा क्या? मेरे में लगा रहा। सब का प्रेम संपादन किया तो भी इससे तेरा क्या? बड़े बड़े समारोह में हो आया, उत्तम भाषण दे दिये परन्तु इसमें तुझे क्या?

इसी प्रकार

मनुष्य का जीवन यह कोई पारसमणि से कम नहीं है अधिक मूल्य वाला है ऐसा समझना चाहिए। मणि तो यह एक भव में ही इच्छित वस्तु दे सकती है किन्तु यह उत्तम जन्म तो, जन्म जन्म को सुधार देता है। इतना ही नहीं किन्तु जो इसको सद्‌गुरु के समर्ग में समर्पण कर दिया जाय तो निश्चय ही यह मानव—भव महा मंगल कारी बनने देर नहीं लगती। जन्म में तो मरण चमक दार होना चाहिए जन्म के आनन्द के बजाय मृत्यु का आनन्द विशेष होना चाहिए। जन्म के पश्चात् मृत्यु तो होती ही है किन्तु जो पुरुषार्थ पूर्वक आराधना हो तो जरूर मृत्यु के पश्चात् मरण रह ही नहीं सकता। पारस का संयोग होने के पश्चात् फिर लोहा लोहे के रूप में रहता ही नहीं। इसी प्रकार पारसमणि जैसा मार्ग सर्वश्रेष्ठ संयोग प्राप्त करने के पश्चात् जो इसको साध लिया जाय तो जीवन लोहे जैसा रह ही नहीं सकता है।

卐

चेतजो

दूसरों के दुर्गुणों का चेप तुम्हें न लग जावे इसके लिए सतर्क रहना। दूसरों की बुराई का भोग तुम्हारी जीभ न बने इसलिए होशियार रहना। जिन्दगी का भरोसा नहीं है इसलिये हो सके उतना आराधना के लिये हमेशा तैयार रहना। गाड़ी स्टेशन छोड़े नहीं उसके पहिले बैठना हो तो सतर्क रहना। राग और द्वेष दोनों मनुष्य को पछाड़ने वाले हैं ये पछाड़े उसके पहिले चेतना। इन्द्रियाँ शिथिल हो जाने के पश्चात् कुछ नहीं हो सकता है इसलिये समर्थ स्वस्थ रहते हुए कुछ कर लेना चाहिए इसके लिये सतर्क रहो। ऊँची वस्तु सस्ते भाव में मिल रही है लेना हो तो चेतना। महंगा मनुष्य का भव मिला है सफल करना हो तो चेतना। जीव मात्र को जीने का हक है यह स्वर्ण सूत्र भूला न जाय इसलिये चेतना। क्रोध और अभिमान मनुष्य के अपूर्व दुश्मन हैं जीवित दुश्मन एक भव में मारता है परन्तु यह दोनों भव-भव में मारने वाले हैं इसलिए इनसे दूर रहो और चैतन्य रहो।

तेरा घर

तू चैतन्यमय, सदा अजर अमर रहने वाला तेरा घर कहाँ और कैसा? क्या ये ईंट और चूने के बंगले तेरे हैं ? क्या तुझे इन्हीं घरों में रहना है हमेशा नहीं नहीं चाहे जैसा हो तेरा घर मिट्टी का नहीं हो सकता। तर घर जाने के पश्चात् तू फिर आने का नहीं है। तेरा घर नहीं मिले वहाँ तक सभी घर दूसरों के दूसरे कहा तक सभाल कररखने के हैं मुसाफिर मुसाफिर खाने में कहाँ तक रहता है ? जहाँ तक गाड़ी आने का समय न हो वहा तक अधिक नहीं। तर लिए भी समय निश्चित हो गया है फिर तुझ कोई एक घड़ी नहीं रहने देगा। मिट्टी मिट्टी को देखकर खुश होती है। मिट्टी को देख कर अनन्त ज्ञान दर्शन चारित्र का स्वामी ये आत्मा क्या नहीं हर्षित होती। "न घर मणी पर माह" जिस प्रकार एक विद्यार्थी एक के पश्चात एक श्रेणी सफल करते हुए लक्ष साधता है उसी प्रकार ॥ सद्गुरुओं के शरण को स्वीकार कर और तेरे घर को प्राप्त करने के लिए पुरुषार्थ कर।

जागते रहो

आये हो तो एक दिन जाना पड़ेगा अचानक बुलावा आयेगा नींद में मत रहो किन्तु जागते रहो कृत्रिम प्रेम रखने वाले तेरे प्रसंग पर पीछे फिर आयेंगे खबर नहीं हो इसलिये जागते रहना। बहुत इकट्ठा करने पर भी कोई कुछ नहीं ले जा सकता इसलिये जागते रहो हँसते रोते हुए एक दिन सब ही छोड़ना पड़ेगा इसलिए जागते रहना। लुटेरे चुपचाप आकर तुम्हारे आत्म धन को न लूट जाये इसलिये जागते रहना। संसार का मोहक वातावरण तुम्हें तुम्हारे ध्येय से विचलित न कर दे इसलिए जागते रहना। अपूर्व शान्ति दायक धर्म की आराधना करने के लिये प्रमाद को छोड़कर जागते रहना। मानवता की रक्षा और दानवता को दफनाने के लिए जागते रहना। संसार की वासनाएँ तुम्हें गहरे खड्डे में खींच न ले जाय इसलिये जागते रहना। सब जीवों के प्रति मित्रता मेरा ध्येय सब जीवों का कल्याण हो यही मेरी भावना और सब जीव श्रेय व सुख यह मेरा मुद्रा लेख है यह पवित्र वृत्ति न छिप जाय इसलिये जागते रहना।

क्षमापन

पश्चाताप के पहाड़ में से बहती है क्षमापना की पवित्र नदी। इस सरिता में स्नान करने वाला कभी पाप से लिप्त नहीं होता है। पश्चाताप की अग्नि में कर्म बंधन को भस्मीभूत करते हुए क्षमापना में आरूढ़ डूबी हुई चन्दन बाला और मृगावती ने केवल ज्ञान को प्राप्त कर गई। क्षमापना देने के लिए हृदय में विशालता और मानस में नम्रता होना चाहिए। इसके बिना उपशम भाव नहीं आ सकता और सच्ची क्षमापना नहीं हो सकती। शासन में भाव रोग को हटाने के लिए क्षमापना सर्वतोमुखी सरल और सफल रामबाण औषधि है। क्षमा वही देता है जो शक्ती शाली हो मांगता वही जो अनुचित कार्य के कारण किसी का हानी पहुँचा चुका हो।। क्षमापना में जीवन उदय की रूपा है निश्च मैत्री का प्रारम्भ और जीवन विकास के शिखर की प्रथम सीढ़ी है। खमें और खमावे वे आराधक, इससे जो विपरित होता है वह विराधक।



इससे तेरा क्या

लोग तेरी वाह-वाह से जय-जय कार करें इससे तुझे क्या ? दिन रात लाड़ी, गाड़ी और वाड़ी के पीछे खो दिये खूब इकट्ठा किया इसमें तेरा क्या ? बहुत बड़े बंगले बाग और मखमल की शैय्या पर सोये पर इसमें तेरा क्या ? मेरे में लगा रहा सब का प्रेम सम्पादन किया तो भी इससे तेरा क्या ? बड़े बड़े समारोह में हो आया लम्बे भाषण भी दिये परन्तु इससे तेरा क्या ? दुनिया में फूल कर फिरा और दूसरों को कुछ न समझा इससे तेरा क्या ? जगत में तेरी आवाज लगे और तेरे नाम को सुनते ही सैकड़ों आग जायें किन्तु इससे तुझे क्या ? वैभव विलास में लगा रहा, नौकरों और चाकरों का पार न रहा किन्तु इससे तुझे क्या ? शरीर का शृंगार करने के लिए खूब साधन जुटाये अच्छे आभूषणों और वस्त्रों से शृंगार किया किन्तु इससे तुझे क्या ? तू सात सागर का राजा बन जाय और तेरे नाम का डंका बजने लगे इससे तुझे क्या ?

बड़ा गुण विनय

सभी गुणों में विनय गुण बड़ा है और सर्वश्रेष्ठ है। इसी से व्यक्ति का व्यक्तित्व खिलता है और जीवन चमक उठता है इसी से निष्ठता का प्रमाण पत्र मिलता है। विनय हाथ-पैर का नहीं हृदय का होना चाहिए। शरीर व उसके अवयव नम जाय इससे कुछ नहीं होता है हृदय नमना चाहिए। हृदय एक घड़े जैसा है घड़े को भरने के लिए जैसे नमना पड़ता है उसी प्रकार हृदय के घड़े को नमाये बिना सद्गुण के जल को वह प्राप्त नहीं कर सकता है। गुण विहीन जीवन निर्गुण अर्थात् अवगुणों का दुर्गन्ध मारता जीवन है। फूल में रही हुई सुगंध सबको आकर्षित करती है उसी प्रकार हृदय के फूल में सदाचरण और सद्व्यवहार की सुगंध हर एक को आकर्षित करती है। जो नमता है वह सबको अच्छा लगता है। विनय होता है तब ही नमन होता है नमन हो तब ही मनन हो सकता है और मनन करे तब ही जीवन में अमृत प्राप्त कर सकता है। परिणाम में सभी को प्राप्त करने का मूल एक ही विनय है इसलिये विनय गुण बड़ा है।

तेरी गिनती क्या

छः खण्ड के चक्रवर्ती और जिसकी सेवा में लाखों देवता रहते थे उ भी यमराज नहीं छोड़ सका तो फिर तेरी गिनती क्या ? अनेक प्रकार की शक्तियाँ थी जिनके पास रावण को भी काल के जबड़े में जाना पड़ा तो फिर तेरी गिनती क्या ? सोने के पहाड़ खड़े करने वाले नंद राजा को भी यमराज ले गया तो फिर तेरी गिनती क्या ? धर्म तीर्थ की स्थापना करने वाले अनंत-ज्ञानी तीर्थंकर भगवन्तों को भी काल ने नहीं छोड़ा तो फिर तेरी गिनती क्या ? महलों में मौज मारने वाले घड़ी के छट्ठे भाग में थे या न थे तो फिर तेरी गिनती क्या ? जिसके पास में घोड़ों की सेना थी और अब जो धन था वे भी काल के झपाटे में आ गये तो फिर तेरी गिनती क्या ? बड़े बड़े मांधाताओं को भी बिना वारंट के जाना पड़ा तो फिर तेरी गिनती क्या ? जिनके एक धक्के से धरती कांपने लगती है ऐसे भी एक दिन उठकर चले गये तो फिर तेरी गिनती क्या ? सिकन्दर जैसे विजेता को भी एक दिन मृत्यु के सामने जाना पड़ा तो फिर तेरी गिनती क्या ?



पर्युषण आये

भव्यों के लिए भाव और ज्ञान पिपासुओं के लिए ज्ञान का दान करने के लिए आये। दानेश्वरियों को योग्य क्षेत्र में दान देने का सन्देश लेकर आये। मैत्री भाव बढ़ाने और आत्म कल्याण के लिए सुन्दर शिक्षण देने के लिए आये। घटाने और बड़ी से बड़ी शक्ति बनाने के लिये आये। आराधना का मार्ग बताने और जिनेन्द्र वाणी को बरसाने के लिए आये। जड़ता को जीतने और वक्रता को दूर करने के हेतु आये।



क्या लाये ?

क्रोध की अग्नि को बुझाने के लिए क्षमा का जल लाये। मान के पहाड़ को खोदने के लिए नम्रता का वज्र लेकर आये। माया के जाल को काटने के लिए सरल वृत्ति की कतरनी लाये। लोभ के राक्षस को समाप्त करने के लिए संतोष का शस्त्र लाये। कषायों के विष को नष्ट करने के लिए परम शान्ति का अमृत [illegible] भरा हुआ घड़ा लाए।

और तुम्हें क्या करने का ?

भव के यह चक्र को अन्त करने के लिए भाव पूर्वक आराधना करो। जिनेन्द्र भगवान की वाणी सुनकर आत्मा को तृप्त करो। हृदय के जीवन का मैत्री भाव का प्रतीक बनाओ। परस्पर स्नेह सद्भाव और सहकार को तुम्हें हमेशा उत्तेजना देना चाहिए। मानव व्यापार से हृदय को निर्मल रखना चाहिए। कषायों को दूर करके हृदय की शीतल वृत्ति को प्रकट करो।

卐

अर्थी और परमार्थी

अर्थ का काम चक्कर में डाल जाने का है और परमार्थ का काम चक्कर से मुक्त करने का है। अर्थ की वृत्ति स्वार्थ को पुष्ट करती है और परमार्थ की वृत्ति आत्मार्थ को प्राप्त कराती है अर्थ अनर्थों की परम्परा उत्पन्न करता है परमार्थ सन्निष्ठा की भावना को जागृत करता है। अर्थी खोता है वहां परमार्थी पा लेता है। अर्थी गोता खाता रहता है और परमार्थी स्थिर स्थान पर बैठ जाता है। अर्थी बहुत कुछ करता है और परमार्थी जो करने का होता है वही करता है।

क्या कभी यह विचार किया है ?

काल कब चढ़ कर आ जायेगा ? पता नहीं है जाना तो है यह निश्चय है किन्तु क्या करना चाहिए इसका कभी विचार किया ? नश्वर देह पुष्टि के हेतु जितना समय खर्च किया क्या आत्मा के लिए भी कुछ करने का विचार किया है कभी ? शरीर को सजाने के लिए सब प्रकार के साधन जुटाने का प्रयत्न किया किन्तु हृदय के सिंगार के लिए क्या चाहिए इसका कभी विचार किया ? खून लाड प्यार से जिसने बड़ा किया है वे ही एक दिन धधकती आग में होम देंगे इसलिए मुझे क्या करना चाहिए कभी विचार किया है ? बुढ़ापे में सभी करने का कहने वाले बुढ़ापे को देखेंगे क्या इसका कभी विचार किया । भाव के बिना कुछ भी सार्थक नहीं होता । स्वयं भाव पूर्वक करते हैं अथवा केवल दिखावे के लिए करते हैं इसका कभी अन्तरात्मा में विचार किया ? मन की मौज और इन्द्रियों की प्रसन्नता में तुम्हारे आत्मन्य को कितना घेठना पड़ेगा इसका कभी विचार किया ?

卐

इतना करना

अब काल सुधर जाय इसलिये हमेशा परमेष्ठी भगवंता का स्मरण और उसमें समा जाने की वृत्ति रखो। किसी के लिए फूल नहीं बन सकते हो तो काँटे तो मत बनाना। किसी का यदि सुधार नहीं कर सकते हो तो बिगाड़ने के लिए तो प्रयत्न मत करो। जीव तुम्हें जितना प्रिय है इसी प्रकार दूसरों को भी प्यारा है इतना कभी मत भूलना। तुम्हारी प्रशंसा कराना चाहते हो तो दूसरों की प्रशंसा करना सीखो। किसी का दे न सको तो लूट लेने की वृत्ति तो मत रखना। कर नहीं सकते हो तो करने वाले के रास्ते में काँटे तो मत बिछाओ। हृदय-मंदिर को विनय और विवेक के रंग से भर कर आराधना के अलंकार से सुशोभित करो। तुम्हारा समय, संपत्ति और शक्ति का अपव्यय न हो इसकी पूरी चिंता रखना। शिष्टाचार, मान मर्यादा और संयम की दीवाल को लांघ कर तुम्हारे मन का घोड़ा दौड़ न जाय इसलिए नियम की लगाम अपने हाथ में रखना। पूरे सार के टुकड़े करने वाली कैंची न बन कर टुकड़े साधने वाली सुई जैसा बनो।



परमेष्ठी सान्निध्य

ज्ञानाचार कि शुद्धि और पवित्रता तभी हो सकती है जब अरिहन्त भगवन्त के कहे हुए ज्ञान का चिंतन कर सकें। दर्शनाचार तब ही टिक सकता है जब अपूर्व दर्शनीय ऐसे सिद्ध भगवन्त उसे ध्यान कर अपने सामने को समझ सके। चारित्राचार का रक्षण तब ही हो सकता है जब आचारों के प्रतिपालक, पालने वाले और प्रचार करने वाले आचार्य भगवन्तों के प्रति सनिष्ठा रख सके। तपाचार की रक्षा के लिए स्वाध्याय तप में लीन पूज्य उपाध्याय भगवन्तों के प्रति प्रबल भक्ति होना चाहिए और वीर्याचार की प्रवृद्धि के लिए साधना मार्ग में रत ऐसे साधु भगवन्तों के प्रति अत्यन्त श्रद्धा होना चाहिए। परिणाम ज्ञानाचार आदि पंच चारों का पालने के लिए अरिहंत आदि पंच परमेष्ठियों का सान्निध्य ही सबसे सुखी सहाय भूत हो सकता है।

✽

दिव्य हॉस्पिटल

अस्पताल में जाने से जैसे रोग का निदान हो जाता है उसी प्रकार जन्म मरण का अनादि काल से लगे हुए रोग के निवारण के लिए मंदिर एक दिव्य हॉस्पिटल है।

मंदिर यान स्था

शांति का धाम ! बाहर की अशान्ति से पीड़ित हुए आत्माओं को परम शान्ति देने के लिए ये शांति के धाम हैं। संसार की कूंची हैं। आत्मधन के भंडार के ऊपर अज्ञानता का ताला लगा हुआ है ज्ञान का प्रकाश इस ताले को खोलने की अलौकिक कूंची जैसा है। स्वच्छ दर्पण ! स्वच्छ दर्पण में जिस प्रकार अपना प्रतिबिम्ब दिखता है उसी प्रकार आत्मा का प्रतिबिंब देखने के लिए मंदिर एक स्वच्छ दर्पण है। स्वयं के जीवन को मैत्री भाव का प्रतीक बनाओ। परस्पर स्नेह, प्रेम और सहकार को शुभ हमेशा रखते रहना चाहिए। मानव व्यापार से स्वयं को निवृत्त रखना चाहिए। कषायों को दूर करके स्वयं को शांति वृत्ति में प्रकट कर।

ॐ

विशाल काय टॉवर

टॉवर प्रत्येक को समय का ज्ञान कराता है और यथा समय काम करने की प्रेरणा देता है। इसी प्रकार ये विशाल काय टॉवर आत्मा की अनन्त शक्ति का ज्ञान करवा कर जागृत करते हैं।

तुझे क्या मिलने का

तू इस पवित्र जीभ से देव, गुरु के गीत गाने के बदले दूसरों के दोषों को गाता फिरता है इससे तुझे मिलेगा क्या ? इन हाथों से दान देकर सफल करने के बदले दूसरों के लड़ाई झगड़ों की व्यवस्था करना और लिखने में इनका उपयोग करने में तुझे इससे क्या मिलने का ? इन कानों से वीतराग की वाणी को बोल सुन कर पवित्र करने के बदले व्यर्थ की निन्दा भरी बातों को सुनने में वापरता है इससे तुझे क्या मिलने का ? इन आँखों को देव गुरु के दर्शन कर पवित्र करने के बदले दुनिया के नट नटनियों के प्रदर्शनों को देखने में लगाता है इससे तुझे क्या मिलेगा ? अच्छे काम में बाधा उपस्थित करके काम को अटकाने का प्रयास करता है इससे तुझे क्या मिलने का ? सच्ची बातों को खोटी दलील से उड़ादे और नाम कर इससे तुझे क्या मिलने का किसी समय किसी के लिए झूठी साक्षी और झूठ पुराने दिये इससे तुझे क्या मिलने का । बैंक में तेरे नाम का खाता खोला, लाखों रुपये जमा कराये और तेरा ही हक रक्खा इससे तुझे क्या मिलने का ? हजारों के बीमें भराये किश्त समय पर भरता रहा और तुझे मिलेगा यह आशा रखता है तो भी तुझे क्या मिलेगा ?

पावर हाउस और गोला

पावर हाउस से इलेक्ट्रिक का करंट बराबर मिलता रहे इसलिये तार का कनेक्शन बराबर रखना पड़ता है जो तार टूट जाय अथवा छटक जाय तो फिर कितना ही मोटा गोला क्यों न हो ? क्या नहीं ए सी या डी सी करंट हो तो फिर भी प्रकाश नहीं पहुंचता है। इसी प्रकार हृदय के पावर हाउस में से मैत्री भावना का तार टूट जाय तो जीवन भर इधर—उधर अंधकार में यों ही भटकना पड़ता है। यदि वीतराग शासन की आज्ञा के अनुसार नियम पूर्वक पावर हाउस चलता रहे और उसमें से सद्भावना का करंट बहता रहे तो फिर जीवन में अंधकार नहीं दीख सकता है।

हम परदेशी

हम सभी परदेशी हैं क्योंकि भटक रहे हैं, स्वदेशी को भटकने की आवश्यकता नहीं। जो स्वदेश में पहुँचे नहीं उसको परदेशी आत्म देश में कैसे रहने दे सकते हैं, परदेशी परदेश का परवाना पूरा होते ही परदेश जाने की तैयारी करता है-उत्साह करता है परन्तु स्वदेश जाने की उसे जरा भी भावना नहीं जागती।

तब तू क्या करेगा !

सुन्दर इस शरीर में जब रोग आकर घेरा डालेंगे और कोई दवा काम नहीं करेगी तब तू क्या करेगा ! तेरी जान की इच्छा नहीं है तो भी यम राज का बुलावा आ जाय और जाना पड़े तब तू क्या करेगा ! कोई पर दया न करने वाले हे भाई ! जिस वक्त तेरी दयनीय स्थिति होगी तब तू क्या करेगा ! किसी का अपमान करने के पहिले विचार करना कि तेरा भी अपमान करने वाला निकलेगा तब तू क्या करेगा ! स्वय का स्वार्थ पूरा होने पर सभी सम्बन्धी धक्का मार कर बहार करने में देर नहीं करेंगे तब तू क्या करेगा ! किसी भी आत्म कल्याण के काम का विचार करने का कहने वाले तुझे विचार करने का अवसर ही न मिले तब तू क्या करेगा ! सब के सामने सिर भारी करने वाले, तेरे सामने यदि कोई सवा सेर आकर खड़ा हो जावे तो फिर तू क्या करेगा ? कोर्ट की तारीख को पैसा देकर फेरने वाले तेरे लिये यमराज के दरबार में तारीख निश्चित हो जावेगी तब तू क्या करेगा !



कभी पूछा है क्या ?

प्रात काल के प्रहर में उठ कर दुनियाँ का खबर पूछने वाले, खबरों की क्या खबर है । स्वयं ज्ञात को कभी पूछा है क्या। विश्व के लोगों की जानकारी रखने वाले तू स्वयं कौन है। स्वयं की अन्तरात्मा से कभी पूछा है क्या। बड़ों को जरा सी तकलीफ हो जाने पर दौड़ कर जाने वालों ने गरीब की भयंकर बीमारी में होते हुए भाई किस प्रकार हो। ऐसा कभी पूछा है क्या। स्वयं की सुविधा हेतु टेलीफोन से बार बार पूछने वालों ने साधारण स्थिति वाले की सुविधा के लिये कभी पूछा है क्या। स्वयं हर एक प्रकार की अनुकूलता में रहता है तो कभी दूसरों की प्रतिकूलता का विचार कर उसे सहायता करने का कभी पूछा क्या। स्वयं के लिए पांच चार बंगले रखते हो तो किसी सड़क पर सोने वालों की क्या हालत है। यह कभी किसी से पूछा है क्या। स्वयं तीन समय मौज मजे उड़ाने वाले कभी अपने स्वधर्मी क्या करते हैं। ऐसा कभी किसी से पूछा है क्या। जो मुझे सम्मान अच्छा लगता हो तो दूसरों का अपमान करके उसे ठेस पहुँचाने का मुझे क्या हक है इस बात को स्वयं के हृदय से कभी पूछा है क्या!



प्रकाश और घर

घोर अंधेरा छा गया हो चारों ओर तारा-गण चमकते हों और अमावस्या पूर्ण रूप में प्रगट हो जाय और जब कुछ न दिखता हो ऐसी स्थिति में भटकते हुए मनुष्य को यदि कहीं से एक आध प्रकाश किरण दिखाई दे तो कितनी प्रसन्नता छा जाय ? कारण प्रकाश से ही सब समझा जा सकता है और देखा जा सकता है । भव के भयंकर अन्धकार को हटाने वाले आत्मा को वीतराग के शासन की प्राप्ति दिव्य प्रकाश के समान है । इसके कारण चरण करण और मरण का पूरा ज्ञान हो जाता है । जिससे प्रत्येक की पवित्रता झलकती रहती है ।



उपकारी और अपकारी

उस जीवन को धिक्कार है जो समस्त उपकारों को भूल कर अपकार करने की प्रवृत्ति में लग जाता है । उपकारी स्वयं के स्वभाव को कभी नहीं छोड़ता अपकारियों को स्वयं की स्थिति में सुधार करना चाहिए । संसार में जो कुछ वेदनाएँ दिखाई देती हैं वे ऐसे ही हीन वृत्ति वालों ने उत्पन्न की है जो थोड़ा सा भी ज्ञान हो जाय तो जो वातावरण है उसमें निश्चित् सुधार हो सकता है अन्यथा ऐसे अपकारी रोते हैं और रोते रहेंगे इसमें सन्देह मत समझो ।

स्वभाव और व्यवहार

जिस दिन समुद्र जैसी गम्भीरता तुम में आ जाय उस दिन तू समझना कि तुझे कुछ मिला है। तेरी शीतलता के आगे चन्द्रमा भी लज्जा वान बन जायेगा। उसी समय तू उन बातों को सार्थक समझना तेरा धैर्य और स्थिरता देख कर बड़े बड़े पहाड़ भी चलाय मान हो जाने उसी समय को तू धन्य समझना। अभी तो तुझ में कुछ नहीं है समुद्र के स्थान पर छोटी थाबड़ी जैसा है तेरा स्वभाव, जो हमेशा थोड़ा पानी पड़ते ही छलक जाती है। तेरा स्वभाव चन्द्र की शीतलता के सन्मुख भट्टी के अगारे जैसा तेरा स्वभाव है जिसे थोड़ा स्पर्श करने ही जल जाता है पहाड़ जैसा धैर्य और स्थिरता के बदले गाड़ी के पहिये जैसा तेरा वाणी व्यवहार थोड़ी देर में राजा भोज और थोड़ी देर में गागू तली के समान चलता रहता है जो इसी प्रकार रहा तो तेरा जीवन निरर्थक बन जायेगा। इसलिए समझ।



शान्ति नगर

अपूर्व शान्ति नगर में पहुँचने के लिए प्रबल साथी होना चाहिए । मार्ग में पड़ने हुए दुर्गम पहाड़ तथा भयानक अटवियों में भूल न जाय इसलिए इन परमेष्ठि भगवन्तों का साथ ही परम सहायक हो सकता है— जिसका साथ उस पर पूर्ण विश्वास होना चाहिए। विश्वास बिना कभी सफलता मिलती नहीं विश्वासी के चरण में सब स्थापन करने के पश्चात् ही सरलता से उसमें शान्ति नगर में पहुँचा जा सकता है।



स्वदेश की स्वतन्त्रता

पञ्च परमेष्ठिओं में सभी स्वदेशियों का समावेश हो जाता है । जिसमें अनंतो पहुंच गये हैं, अनेक पहुँचने की तैयारी में हैं और अनको ने मार्ग पकड़ लिया है । स्वदेश जाने की इच्छा रखने वाला जो परमेष्ठिओं का साथ किये बिना छुटकारा नहीं है। स्वदेशियों के प्रति जिन्हें प्रेम है उसको परदेश में भी लोक चाहना मिलती है । फिर भी देश याने देश स्वतन्त्रता जितनी स्वदेश में होती है उतनी परदेश में हो ही नहीं सकती।

एक समझे तो

दुनिया में समझाने वाले बहुत हैं किन्तु समझने वाले बहुत कम हैं। समझाने वाले समझ जाय तो समझने वाले बहुत हैं। बहुतों को समझाना सरल है किन्तु एक को समझाना कठिन है। एक को समझाने के पश्चात् बहुतों को तो थोड़े परिश्रम से ही समझ जाते हैं। एक को समझाने के लिए एक के शरण में जाना चाहिए उसके सामने सदैव नतमस्तक रहना चाहिए। किसी एक के ऊपर अपूर्व निष्ठा रखना चाहिए एक अरिहंत की शरण लेना चाहिए और अकेले मन को समझाने के लिए होना चाहिए एक का पक्का दृढ़ संकल्प यदि एक समझ जाये तो फिर बहुत से समझ जायेंगे।

卐

परमेष्ठि की प्रीति

परमेष्ठि की प्रीति प्रकाश की ओर ले जाती है इससे विमुख रहना अर्थात अंधकार को निमन्त्रण देना है परमेष्ठियों की भक्ति आत्मशक्ति को बढ़ाने वाली है यह शक्ति असीम होती है इसके प्रकट होते ही स्व और पर का भेद जल्दी समझा जा सकता है और दिव्यता के दर्शन हो जाते हैं।

स्वदेशी और विदेशी

परदेशी की प्रीत [illegible] की प्रीत कहां तक, परदेशी की [illegible] की प्रीत हमेशा के लिए [illegible] और परदेशी हैं सभी समान [illegible] है यदि नगर स्वदेशी है परदेश [illegible] और न उसके यहां तक [illegible] के [illegible] जन्म जन्म का [illegible] प्राप्त व निपटारा होगा।

[illegible] इच्छा

जहां तक शुभ [illegible] और [illegible] का आग्रह नहीं [illegible] इच्छानुसार कुछ भी [illegible] होगा [illegible] में गहन विचार [illegible] कामनाएँ अधूरी रह [illegible] हटाने के लिए [illegible] नितांत आवश्यक है।

मुश्किलें और इच्छाएँ

परदेश से निकल कर स्वदेश की ओर जाते वक्त व्यक्ति को रास्ते में कितनी ही मुसीबतें उठाना पड़ती हैं तो भी क्या वह घबराकर स्वदेश जाने की इच्छा को छोड़ सकता है। नहीं मुश्किलें और कठिनाइयों से अधिक तमन्ना है स्वदेश पहुँचने की। इसीलिये वह सभी को भोगकर लेता है इसी तरह स्वदेश तरफ जाते हुए इस आत्मा को जो कोई आपत्ति अथवा मुश्किलें आवें इससे क्या स्वयं के देश को भूल जाय? कौन समझदार मनुष्य देश को भूल सकता है।



आराधना अरिहत की

प्रवचन प्रचारक, उपदेशक अरिहत हैं जहाँ तक कर्णेन्द्रिय स्वस्थ न हो वहाँ तक उसकी वाणी कान तक नहीं पहुँचती। स्थिरता के अभाव में वे अन्तर के पापों को हटाने वाली नहीं। इसीलिए कर्णेन्द्रिय स्वस्थ हो तभी सुनकर समझ सकते हैं इसकी आज्ञा और वह समझ जाय तब ही सच्ची आराधना हो सकती है अरिहत भगवान की।

इतना चाहिए

ज्ञान देने वाले अरिहंत, दर्शन देने वाले सिद्ध, आचार की शिक्षा देने वाले आचार्य, ज्ञान के समीप लाने वाले साधु इन पांचों में सब समा जाते हैं। इन पांचों के अतिरिक्त दूसरे के पास कुछ भी मिलने का नहीं। इसीलिये इन पांचों के ऊपर भक्ति प्रीति अनुराग जब हो मानना चाहिए कि जीवन धन्य है और धन्य समझना चाहिए उस दिन को। दिल के दीवाने-आम में परमेष्ठियों के गीत का गुंजारव हुआ करे, इनका जाप होता रहे और इनका ही प्रसंग हुआ करे ऐसी मेरी सतत प्रार्थना है। यह मिलन है, बाकी सब कुछ व्यर्थ है।

❀

— [illegible]

परकीया से निर्मोही होकर [illegible] दौड़ाने वाला भ्रमर परदेश की [illegible] को भूलकर स्वदेश की स्वाधीनता [illegible] लालायित हो जाता है।

ममत्व और समत्व

ममत्व मारने वाला है और समत्व तारने वाला है। ममत्व का विकृत रूप संसार और समत्व का शुद्ध रूप मुक्ति है। ममत्व बढ़ने से आसक्ति बढ़ती है तथा समत्व बढ़ने से विरक्ति बढ़ती है। आसक्ति में बन्धन है वहीं विरक्ति में स्वतन्त्रता है। आसक्ति से राग बढ़ता है और राग फैलता है विरक्ति से विराग और विराग से सत्य मुखी दृष्टि का विकास होता है।



परम तेज

सिद्ध भगवंत लोक के अग्र भाग में विराजे हुए हैं। उनके चक्षुइन्द्रिय है यह स्थिर है इसके विषयों पर विजय प्राप्त की हो तो अरूपी के दर्शन हो सकते हैं यदि इसमें विकार हो राग द्वेष की परिणती हो तो यही चक्षु गहरी खाड़ी में धकेल देते हैं इसीलिए चक्षुइन्द्रिय के अन्य विषयों को जीत लिया जाय तो ही परम तेज के दिव्य प्रकाश को पाया जा सकता है।

स्वय की वचना

अपना शुभ चिंतक कोई नहीं है, केवल मात्र एक परमेष्ठी ही अपने शुभेच्छुक व हितेच्छुक हैं। बाहर से प्रेम भरा व्यवहार रखने वाले समय आने पर अन्तर से शामिल काम करते हुए डरते नहीं। यही परमेष्ठी भगवन्त तो जिस समय कहीं नहीं मिलता वहाँ उसके भी अपने पे आश्रय दाता बनते हैं। उनको नहीं तो स्वार्थ है और न किसी से लेना देना। निःस्वार्थ कल्याणकारी विश्व वत्सल ऐसे परमेष्ठियों से दूर रह कर जो सचमुच पराये हैं उसके ऊपर ममत्व रखते हैं वे स्वय की जाति की वचना कर रहे हैं।



दिव्य दर्शन

परमेष्ठियों की प्रीति प्रकाश की ओर ले जाती है इससे विमुख रहना अंधकार को निमन्त्रण देना है। परमेष्ठियों की भक्ति शक्ति को बढाने वाली है यह शक्ति अपार होती है। इस शक्ति के प्रगट होते ही स्व और पर के भेद जल्दी ही समझे जा सकते हैं। और दिव्यता के दर्शन हो जाते हैं।

सभी मिलेंगे

क्रोध में समता शांति कैसे आ सकती है? अशांत हृदय को। मान में अकड़ कर रहने वाला नम्रता का मिठास कैसे चख सकता है? माया में मौज मानने वाला निष्कपट प्रकृति का परिचय किस तरह दे सकता है? और लोभ में निमग्न रहने वाला संतोष का पाठ कैसे सीख सकता है। सबका एक ही स्थान पर दर्शन करना हो तो आओ इन परम पूज्य परमेष्ठिओं की शरण में। शांति और नम्रता का जहाँ साक्षात्कार हो सकता है और माया और लोभ के स्थान पर सरलता और अपूर्व संतोष के दर्शन हो सकते हैं। क्योंकि परमेष्ठी के पद को वही आत्मा पा सकती है जो कषायिक वृत्ति को हटाकर आत्म शांति की तरफ बढ़ती है।

शास्त्र का सार

महामन्त्र के एक भी पद का अपलापक महामन्त्र का ही अपलापक है इतना ही नहीं वह परमेष्ठी की भक्ति के प्रति विहीन है परमेष्ठी का परमेष्ठित्व इससे बाहर नहीं होता अतः इसमें जैन शासन का तत्व समाया हुआ है। महामन्त्र के एक एक अक्षर में समस्त शास्त्रों का सार समाया हुआ है।

परमेष्ठियों की प्रतिष्ठा

हृदय के सिंहासन के ऊपर परमेष्ठियों को प्रतिष्ठित किया जावे तो ही इस सिंहासन की शोभा है। अन्य इष्ट जितने हैं वे सब या तो अनिष्ट में परिणामने हैं अथवा अल्पेष्टि में परिणाम भूत होते हैं। जहाँ परम श्रेष्ठ ऐसे परमेष्ठी तो हमेशा ही परमात्मा स्वरूप सदा स्थिर रहने वाले हैं।

※

पारसमणि

जिसका स्पर्श लोहे का होते ही लोहा सोना बन जाता है ऐसा पारसमणि जिसे मिल जाता है उसका भाग्य जग गया है ऐसा समझना चाहिए। ऐसे पारसमणि को कौन नहीं चाहता ? मिलने के पश्चात् इसका उपयोग कौन नहीं करता है ? उपयोग करने वाला क्या नहीं प्राप्त कर सकता है ? ऐसे पारसमणि को पाना साधारण वस्तु नहीं है।

महा मन्त्र की शरण

ग्रीष्म में तप हुए प्राणी को गहर वृक्ष की छाया कितनी आनन्द दायक होती है ? रण (रेगिस्तान) में जाने वाले प्यास स दु खी मनुष्य को जल से भरे तालाब क मिल जाने पर कितनी शान्ति होती है ? श्रम से थके हुए प्राणी को आराम घर कितना आनन्द दायी होता है इससे बहुत अधिक अनन्त गुण प्रमोद कारक शान्ति प्रदायक और आराम प्रद होता है मत्राधिराज श्री नमस्कार महामन्त्र की शरण। कारण गहरी छाया वाला वृक्ष गर्मी को शान्त करने वाला होता है किन्तु महामन्त्र तो जन्म जन्म की उष्णता के परम ताप का उपशमन करने वाला है और ये तो कल्प वृक्ष है सरोवर तो थोड़ी देर की तृषा को शान्त कर सकता है वही महामन्त्र का शरण अनादि काल की तृषा को शान्त कर देने वाला है। आराम घर से समय आने पर जाना पड़ता है वहाँ मत्राधिराज ऐसे आराम घर में ले जाता है जहाँ फिर से आना ही न पड़े।



कार्यकर्ताओं का आदर्श

कर्त्तव्य का पालन यही कार्यकर्ताओं का प्रतीक होता है, अनुशासन बद्ध रहना कार्यकर्ताओं का ध्येय होता है और नियम पूर्वक लगन से बड़ा काम करना यह कार्यकर्ताओं का आदर्श होता है सभी से हिल मिल कर रहने की प्रवृत्ति यह कार्यकर्ताओं के परिचय का प्रमाण है अनुकूलता और प्रतिकूलता स्वयं के कर्त्तव्य में कार्यकर्ता कभी अनुशासन से विचलित नहीं होता है ऐसे कार्यकर्ता ही देश व समाज में जागृति और जीवन का संचार कर सकते हैं।

❋

बाधक है चक्र

सांसारिक मनुष्यों की मोह की स्थिति बड़ी विचित्र होती है किसी भी स्थिति में वह स्वयं छूटने को तैयार नहीं और किसी को छूटने देने के लिए भी तैयार नहीं यह दुखद स्थिति ही प्रगति में हमेशा के लिए बाधक बन जाता है जिसे स्वयं की स्थिति का भान होता है वह कहीं भी ऐसे चक्र की स्थिति में नहीं पड़ता।

सच्चा धन

व्यवहार में कहावत है कि "वसु बिना नर पशु" इसका अर्थ यह नहीं है कि बिना धन वाला मनुष्य पशु की श्रेणी में गिना जाता है परन्तु यह धन कैसा ? चपल या क्षण भंगुर है ऐसा नहीं और न मृग तृष्णा जैसा है किन्तु शाश्वत धन सम्यक ज्ञान रूप धन है इससे रहित मनुष्य अवश्य पशु की गिनती में गिना जाता है कारण इसके बिना सार असार, सत्य असत्य का ज्ञान नहीं हो सकता है और विवेक हीनता बढ़ती जाती है।



नमस्कार

जिसमें से 'म' कार चला गया है उस ही नमस्कार करना चाहिए जहां 'म' कार हट जाता है वही सच्चा नमस्कार होता है समर्पण की सम्पूर्ण भावना जागृत हो तब ही नमस्कार सफल होता है नमस्कार से दूर होता है अन्धकार, गाढ़ अंधेरे को दूर हटाने के लिए भाव पूर्वक किया हुआ नमस्कार अपूर्व शक्ति शाली तेज पुंज का काम करता है। परमेष्ठियों को किया हुआ नमस्कार परम श्रेष्ठ नमस्कार कहलाता है।

वचन का मूल्य

तुम्हारा दरिद्रता का प्रदर्शन मत करो जो नहीं जानते होंगे उन्हें भी तुम्हारी खबर पड़ जावेगी। धन से दरिद्र हो तो भले ही हो किन्तु खरा दरिद्री तो वचन दरिद्री है जिसके पास योग्य वचन नहीं योग्य शब्द नहीं है तो चुप रह जाना चाहिए किन्तु वचन का दिवाला निकालने की बात न करो। जीवन में धन से अधिक वचन का मूल्य है, इसका यदि दिवाला निकल गया तो निश्चय समझो तुम कभी भी उन्नति नहीं कर सकते हो और जीवन भर के परिश्रम का परिणाम शून्य आवेगा।



सज्जनों का

सज्जन की स्मृति प्रेरणा देने वाली होती है इसलिए उनका स्मरण अवश्य करते रहना चाहिए सत्य जिसके मन, वचन और काया में ठोस कर भरा है उसी को सज्जन कहा जाता है। उसी को सज्जनता की उपाधि शोभा देती है।

भावना और दुर्भावना

सद्भावना आत्माभिमुख की ओर ले जाने वाली है दुर्भावना संसार कि तरफ ले जाने वाली है। सद्-भावना वाला व्यक्ति स्वय के आत्म बल पर चलता है। दुर्भावना वाला व्यक्ति दूसरे के आश्रय के ऊपर चलने वाला होता है। सद्भावना में जीवन-मार्ग क कल्याण का अमृत भरा हुआ है दुर्भावना हलाहल जहर है। अमृत से अमरता मिलती है जहर से जीवन बीच में ही समाप्त हो जाता है भावना अन्धकार में प्रकाश फैलाने वाली है दुर्भावना प्रकाश में अन्धकार करने वाली है।

ॐ

शान्ति और उग्रता

बात करो किन्तु शांति से गर्मी म घबराहट फल जाती है, शांति म होने वाली बात में सुन्दरता और सरलता रहती है, गर्मी स बात बिगड जाती है बात एक ही होने हुए भी कहने की शैली पृथक पृथक होने से परिणाम सुखकारी अथवा दुख कारी हो सकता है इसीलिए शांति के साथ योग्य रीति से कहना और बोलना चाहिए।

सबका सभी

मनुष्य जीवन में बहुत कुछ करता है किन्तु परिणाम में शून्य ही आता है कारण सब सभी का है स्वय का कुछ नहीं होता सब सभी ले लेते हैं स्वय स्वय का कुछ नहीं ले सकता। जो मिल रहा है वह स्वय का नहीं है स्वय को स्वय का मिल जाता है तब ही अपूर्व आनन्द और उल्लास प्रकट होता है स्वय को प्राप्त करने के हेतु स्वय में लीन होना पड़ता है। जब एकान्त में बैठ कर विचार किया जाय तब ही मनुष्य इस बात को समझ सकता है कारण कि बात गंभीर है किन्तु उस समझन के पश्चात् ही उसका महत्व समझा जा सकता है।

लेने के पूर्व विचार करो

तुम बिना विचार किसी भी बात की जवाबदारी अपने ऊपर मत लो भविष्य का विचार करो और ध्यान दो। इसका विचार नहीं किया तो निश्चित समझो कि जवाबदारी लेने के पश्चात् पछताना पड़ेगा। दुनिया के लोग दोनों ओर बिगड़ने वाले हैं स्वयं की बात का ख्याल स्वय को ही रखना चाहिए।

ज्ञानी और अर्ध ज्ञानी

क्या कोई किसी के स्वभाव को बदल सकता है ? ज्ञानी महत् हैं कि समझदार के स्वभाव को बदला जा सकता है अथवा सर्वथा अज्ञानी के स्वभाव को बदला जा सकता है किन्तु अर्ध ज्ञानी के स्वभाव में परिवर्तन नहीं लाया जा सकता उसकी स्थिति पुत्ते की पूंछ जैसी होती है। इसीलिए अर्ध ज्ञानी बनना ठीक नहीं तथा सर्वथा निरक्षर भट्टाचार्य बनना भी ठीक नहीं इसीलिये ज्ञान प्राप्त करो। ज्ञानवान और समझदार बनो।

विनय का फल

बिना विनय के सब व्यर्थ है। जितना पढ़ो में आया है वह सभी सफल हो सकता है जब उसके मूल में विनय हो ? जिसके मूल में विनय होता है वही काम सिद्ध हो सकता है। जहाँ तक विनय नहीं वहाँ तक सफलता दूर रहती है। बिखरे हुए फूलों को एकत्रित करने के लिए मनुष्य को नमना पड़ता है बिना नमे उसके हाथ में कुछ भी नहीं आ सकता है, इसी प्रकार बिखरे हुए सद्गुणों की प्राप्ति के हेतु बिना विनय के काम होना कठिन है।

शिक्षा और शिक्षित दशा

शिक्षा प्राप्त करना और शिक्षित होना इन दोनों में भारी अन्तर है शिक्षा इस लोक में लाभ के हेतु काम में आती है शिक्षित दशा परमार्थिक दृष्टि काण को समझाती है। वर्तमान में शिक्षा का अनुराग सब ही और बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है किन्तु शिक्षित होना किसी को पसन्द नहीं अन्यथा मानव सभ्यता किसी समय दयनीय ही नहीं हो सकती।



धर्म का फल

जीवन और धर्म का निकटतम सम्बन्ध है। धर्म को पृथक रख कर केवल जीवन व्यतीत करने में आता है तो वह जीवन नहीं किन्तु प्राण रहित पिंजर को केवल खींचना है जिसके सहारे से पतित भी पावन हो जाता है। अयोग्य व्यक्ति योग्यता को प्राप्त कर सकता है। स्वार्थ को छोड़कर नीति और नियम को प्राप्त करना यही धर्म है। जीवन मात्र को स्वयं के जैसा मानकर जैसे सुख और दुःख का अनुभव स्वयं को होता है उसकी कल्पना करके प्रत्येक के विषय में विचार करना यही धर्म है।

संसार और संसारी

क्रोध और मान दोनों द्वेष को बढ़ाने वाले हैं, माया और लोभ राग बढ़ाने वाले हैं, सारा संसार इन्हीं अपनी धारणा का शिकार बना हुआ है संसार में विरक्त रहने वाले को ये स्पर्श नहीं कर सकते हैं। इन से जो दूर रहता है वह संसारी नहीं संसार में रहते हुए जो इन से दूर रहता है वही सुखी रह सकता है।



बीचका पर्दा

बीच में कपड़ा (पर्दा) आ जाता है तब स्पष्ट और स्वच्छ वस्तु भी अस्पष्ट तथा मंदी दिखाई देती है। यह वस्तु मंदी नहीं है किन्तु देखने वाले की दृष्टि के बीच में आने वाला पर्दा मंद कर देता है इसी प्रकार ज्ञान के ऊपर पर्दा पड़ गया है सम्यक् ज्ञान के ऊपर पर्दा पड़ गया है और इसी से ज्योतिर्मय ज्ञान प्रकाश भी मंद पड़ गया है रास्ता दिखाई नहीं देता है तब ही रास्ता दिखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है। इस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए अज्ञान के पर्दे को दूर करो और सम्यक् ज्ञान प्राप्त करो।

भय, निर्भय और अभय

जहाँ तक भय रहता है वहाँ तक मन पीछे का पीछे लगा रहता है। भय से मुक्त होकर निर्भय स्थिति होती है तब ही आत्मा का जोर रहता है और इससे भी बढ़ कर अभय स्थिति हो जाती है। तब स्वभाव दशा की स्थिति प्राप्त हो जाती है इसीलिए भय से निर्भय और अभय बनने का परमश्रेष्ठ मार्ग है परमेष्ठी महा मन्त्र की आराधना। महामन्त्र का आराधक डरता नहीं है चाहे उसके सामने कोई भी स्थिति हो और वह किसी को डराता भी नहीं है। वह तो स्वयं के आनन्द में मस्त रहता है। जिसके पीछे भय रहता है वह हमेशा दया का पात्र बना रहता है।

卐

बिंदु मात्र

नीचे की ओर दौड़ना सब के लिये सरल है किन्तु आराधना के पहाड़ के ऊपर चढ़ने वाला कोई एक वीर ही मिलता है। ज्ञान प्राप्ति हेतु शंका की जा सकती है परन्तु ज्ञान में कहीं भी शंका को स्थान नहीं।

ममार और ससारी

क्रोध और मान लोभा द्वेष को बढ़ाने वाले हैं, माया और लोभ राग बढ़ाने वाले हैं, सारा ससार इन्हा अरुपी कारणा का शिकार बना हुआ है ससार से विरक्त रहने वाले को ये स्पर्श नहीं कर सकते हैं। इन से जो दूर रहता है वह ससारी नहीं ससार में रहते हुए जो इन से दूर रहता है वही सुखी रह सकता है।



बीचका पर्दा

बीच में कपड़ा (पदा) आ जाता है तब स्पष्ट और स्वच्छ वस्तु भी अस्पष्ट तथा मैली दिखाई देती है। वह वस्तु मैली नहीं है किन्तु देखने वाले की दृष्टि के बीच में आया हुआ पदा मद कर देता है इसी प्रकार ज्ञान के ऊपर पदा पड़ गया है सम्यक ज्ञान के ऊपर पदा पड़ गया है और इसी से ज्योतिमय ज्ञान प्रकाश भी मद पड़ गया है रास्ता दिखाई नहीं देता है तब ही रास्ता दिखने के लिए प्रकाश की आवश्यकता है। इस प्रकाश को प्राप्त करने के लिए अज्ञान के पर्दे को दूर करो और सम्यक ज्ञान प्राप्त करो।

भय, निर्भय और अभय

जहां तक भय रहता है वहां तक भय पीछे का पीछे लगा रहता है। भय से मुक्त होकर निर्भय स्थिति होती है तब ही आत्मा का जोर रहता है और इससे भी बढ़ कर अभय स्थिति हो जाती है। तब स्वभाव दशा की स्थिति प्राप्त हो जाती है इसीलिए भय से निर्भय और अभय बनने का परमश्रेष्ठ मार्ग है परमेष्ठी महा मन्त्र की आराधना। महामन्त्र के आराधक डरता नहीं है चाहे उसके सामने कोई भी स्थिति हो और वह किसी को डराता भी नहीं है। वह तो स्वयं के आनन्द में मस्त रहता है। जिसके पीछे भय रहता है वह हमेशा दया का पात्र बना रहता है।

बिंदु मन्त्र

नीचे की ओर दौड़ना सब के लिये सरल है किन्तु आराधना के पहाड़ के ऊपर चढ़ने वाला कोई एक वीर ही मिलता है। ज्ञान प्राप्ती हेतु शंका की जा सकती है परन्तु ज्ञान में कहीं भी शंका को स्थान नहीं।

संग्रह करके रक्खो

सच्ची शक्ति मितव्ययी कम बोलने वाले को ही मिलती है। मन का मित्र होने के लिए सबमें मित्रता रखना अमोघ उपाय है। आधि, व्याधि और उपाधि से बचने के लिए देव गुरु और धर्म को स्वीकार करना यही श्रेष्ठतम है। अच्छे फल के प्राप्ती के लिए अच्छे बीज बोना चाहिए। दूसरों के ऊपर काबू रखने की वृत्ति के बजाय स्वयं के मन और इन्द्रियों पर काबू रखने वाला महान है। मारने की इच्छा हो तो स्वयं की वासनाओं को ही मारना अच्छा। सब जाय तो जाने दो, किन्तु स्वयं का सत्य और शील न जाय इसकी चौकसी रक्खो। रत्न को कांच के टुकड़े के बदले में नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार मनुष्य जन्म भौतिक सुखों में ही न चला जाय इसकी पूरी चिन्ता रखनी चाहिए। दया का दिया हृदय में जलता रहे तो ही दुःख से बचा जा सकता है। जिस जीवन में सम्यग् ज्ञान का प्रकाश न हो उस जीवनधारी को भटकने के सिवाय दूसरा रास्ता मिल ही नहीं सकता।



तीन चक्र

भव भ्रमण संसार चक्र। यह चक्र चलता रहता है इसका कारण है कर्म चक्र। इसको हटाने की प्रेरणा देने वाला और प्रेरणा को शक्तिशाली बनाने वाला है धर्म चक्र। अर्थात अन्त में सतनामुखी श्रेय साध लिया जाय और उन स्थान प्राप्त कर लिया जाये उसको कहा जाता है सिद्ध चक्र। कर्म चक्र भव का बढ़ाने वाला धर्म चक्र भव का घटाने वाला और सिद्ध चक्र आत्म गुणात्मक स्वभाव में स्थिर करने वाला है। कर्म चक्र अर्थात् संसार। धर्म चक्र अर्थात संसार सागर का किनारा और सिद्ध चक्र अर्थात संसार से उद्गमन। कर्म चक्र के कारण ही भव भव की कटु लीला का दर्शन करना पड़ता है। धर्म चक्र के मनुष्य के प्रताप से मोक्ष का अमृत जीवन को मधुरता वाला बनाता है। सिद्ध चक्र के पुण्य प्रताप से सर्व सत्ता युक्त परमानन्द हो नहीं सह आनन्द के सर्वोत्कृष्ट उच्च स्थान पर आसीन होता है। बहिरात्मा, अन्तरात्मा और परमात्मा इन तीन श्रेणियों को समझने के पश्चात ही अनन्ता नन्दी पद को प्राप्त किया जा सकता है। बाह्य पदार्थों में अपने पन का आरोपण करना और स्वयं को समझना यह बहिरात्मा दशा है अर्थात कर्म चक्र का खिलौना। बाह्य पदार्थों से स्वयं का सम्बन्ध छोड़ कर अन्तर में गति करना और उसमें लीन रहना

संग्रह करके रखो

सच्ची शक्ति मितव्ययी कम बोलने वाले को ही मिलती है। सब का मित्र होने के लिए सबसे मित्रता रखना अमोघ उपाय है। आधि, व्याधि और उपाधि से बचने के लिए देव, गुरु और धर्म को स्वीकार करना यही उत्तम है। अच्छे फल के प्राप्ती के लिए अच्छे बीज बोना चाहिए। दूसरों के उपर काबू रखने की वृत्ति के बजाय स्वयं के मन और इन्द्रियों पर काबू रखने वाला महान है। मारने की इच्छा हो तो स्वयं की वासनाओं को ही मारना अच्छा। सब जाय तो जाने दो, किन्तु स्वयं का सत्य और शील न जाय इसकी चोकसी रखो। रत्न को राख के टुकडे के बदले में नहीं दिया जा सकता। इसी प्रकार मनुष्य जन्म भौतिक सुखों में ही न चला जाय इसकी पूरी चिन्ता रखनी चाहिए। दया का दिया हृदय में जलता रहे तो ही दुःखों से बचा जा सकता है। जिस जीवन में सम्यक ज्ञान का प्रकाश न हो उस जीवन धारी को भटकने के सिवाय दूसरा रास्ता मिल ही नहीं सकता।

रत्न कणिका

स्वभाव पानी के समान होना चाहिए जैसी परिस्थिति हो उसके अनुसार करते हुए भी स्वय को पृथक रखना चाहिए। सज्जन मनुष्य इशारे से समझ जाते हैं कम बोलते हैं और हृदय में विचार करके बोलते हैं। बहुत हसना यह अज्ञानता की निशानी है। जिस आज्ञा का पालन किया जाय उसी को कहते हैं आराधना। वैद्य का काम विधि बताने का है दवा का सेवन तो रोगी को स्वय ही करना पड़ता है। जीभ ही हसाने वाली और रुलाने वाली है। अर्थ का काम चक्कर को बढाने वाला है और परमार्थ का काम चक्कर से मुक्ति दिलाता है। योग्य कारीगर के हाथ में आने पर बेडौल पत्थर भी पूज्यता का स्थान प्राप्त कर लेता है। अनुचित आचरण पाप और समुचित आचरण पुण्य कहलाता है। क्षमा देना और मागना ये वीरत्व का लक्षण है। अधिक फुर-सत आलस को उत्पन्न करती है मकड़ जैसा मन कभी रानी और कभी बानी बना देता है। व्यक्ति के निर्माण की आधार शिला उसके अन्तर में रहे हुए विचार हैं। सद्भावना का मन्त्र बराबर चालू रहे तो उसके द्वारा दिव्य प्रकाश प्राप्त किया जा सकता है। ससारियों का साथ ससार में फसायेगा और त्यागियों की संगति मुक्ति की ओर ले जायेगी। भरे हुए बादल बिना कुछ

यह अन्तरात्म अर्थात धर्म चक्र की शरण। इससे भी आगे बढ़कर परमेष्ठ आत्म गुण की साधी में तल्लीन रह कर उसी भाव के अनुसार स्थिति प्राप्त करना यह परमात्मा दशा अर्थात सिद्ध चक्र में स्थिर रह कर स्थित रहना।



बेट्री और पावर

हे मनुष्य। बेट्री में पावर भर कर रखने में आवे तो अंधेरे में उजियाला हो जाय। नीची जमीन का ख्याल रह जाये और सीधे रास्ते सरलता से चला जा सकता है। हृदय की बेट्री में वीतराग आज्ञा का पालन और श्रद्धा रूप पावर भर हुए रख और फिर देख। तुझे सभी कुछ लग जाने स्पष्ट। इसके प्रकाश में ही फिर नित्यानन्द का ज्ञान हो सकता है और खड्डे, टेकरे बेकार दीखने लगेंगे।



रत्न कणिका

स्वभाव पानी के समान होना चाहिए जैसी परिस्थिति हो उसके अनुसार करते हुए भी स्वयं को पृथक रखना चाहिए। सज्जन मनुष्य इशारे में समझ जाते हैं कम बोलते हैं और हृदय में विचार करके बोलते हैं। बहुत हंसना यह अज्ञानता की निशानी है। जिस आज्ञा का पालन किया जाय उसी को कहते हैं आराधना। वैद्य का काम विधि बताने का है दवा का सेवन तो रोगी को स्वयं ही करना पड़ता है। जीभ ही हंसाने वाली और रुलाने वाली है। अर्थ का काम चक्कर को बढ़ाने वाला है और परमार्थ का काम चक्कर से मुक्ति दिलाता है। योग्य कारीगर के हाथ में आने पर बेडौल पत्थर भी पूज्यता का स्थान प्राप्त कर लेता है। अनुचित आचरण पाप और समुचित आचरण पुण्य कहलाता है। क्षमा देना और मांगना ये वीरत्व का लक्षण है। अधिक फुरसत आलस को उत्पन्न करती है मर्कट जैसा मन कभी रानी और कभी राना बना देता है। व्यक्ति के निर्माण की आधार शिला उसके अन्तर में रहे हुए विचार हैं। सद्भावना का मन्त्र बराबर चालू रहे तो उसके द्वारा दिव्य प्रकाश प्राप्त किया जा सकता है। संसारियों का साथ संसार में फसायेगा और त्यागियों की संगति मुक्ति की ओर ले जायेगी। भरे हुए बादल बिना कुछ

घोल पया करके पन जाते हैं। गम्भीरता मनुष्य का सतोगुणी गुण है। जीवन में धन की आवश्यकता है या 'जीवन धन" की ओर दृष्टि है ? इसका विचार करना चाहिए। तुम स्वय के कर्त्तव्य को समझो और उसके पालने हेतु दृढ़ चित रहा करो में तुम्हारी महानता है।



शक्ति का उपयोग

शक्ति सशक्त बना सकती है तथा अशक्त बनाने का सामर्थ्य भी इसी में है। प्राणी मात्र में शक्ति अधिक अथवा कम प्रमाण मे रही हुई है ही और इसी के आधार पर हृदय में रही हुई इच्छाओ और आशाओ को पूरा करने का उसका प्रयत्न चालू ही रहता है। तो भी शक्ति का उपयोग करते आवे तो ही उसका सदुपयोग हुआ ऐसा कहा जावेगा। अन्यथा दुरुपयोग में तो कुछ नहीं लगती है जो सदुपयोग करना जानता है उसी की कीमत होती है शक्ति का सदुपयोग करने वाले व्यक्ति का स्थान जनता के अन्तर में होता है जिसको इसका ध्यान ही नहीं वह सादा दुःख ही उठाता रहता है। शारीरिक शक्ति यह शक्ति नहीं है कभी कभी पहलवान गिर जाने वाले को दुबली काया वाला बिना बल के

कला में उसे झुका देता है। यह वही आत्म शक्ति है जिसमें यह आत्म शक्ति होती है वह अपनी इच्छानुसार कार्य कर सकता है। शक्ति का सदुपयोग का जब ही आत्म शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। पत्थर में फूल सी सुगंध की आशा करने वाले शक्ति का व्यय करते हैं इसमें कौन सी सिद्धि मिल सकती है? आत्म शक्ति को प्राप्त करने के लिए उसके कारण भूत रहे हुए धर्मानुष्ठान आराधना की ओर तन, मन और वचन को झुकाना आवश्यक है इस तरफ जैसे पैर बढ़ते जाते हैं वैसे भार का भूत हल्का होता जाता है और मार भूस समीप आता जाता है। स्वयं के परिचय का प्राप्त करने में जो शक्ति का व्यय होता है वह सद्व्यय कहा जाता है और दूसरों की भलाई के लिए शक्ति का व्यय अपव्यय कहलाता है सदुपयोग उसे ही कहा जायेगा जो स्वयं के लिये हुआ हो। इसीलिए शक्ति सब को मिली है किन्तु विचार पूर्वक योग्य उपयोग जो करता है सच्ची सफलता उसे ही मिलती है।

दो शब्द

त्याग और भोग, दो शब्दों के विश्लेषण से युक्त है, प्राणी मात्र का जीवन संसार इन दो शब्दों को ही सुख दुःख की उपमा दी जा सकती है राग और द्वेष कहो अथवा खेद और प्रसन्नता यह सभी दो शब्दों में ही समाया हुआ है। जितने प्रमाण में त्याग उतने ही प्रमाण में भोग की कमी और इसी से ही सुख का उद्भव जीवन निराशा व मृत्यु का उदय और प्रसन्नता का प्रवाह बढ़ता जाता है। त्याग जहां होता है भोग घटता है, भोग से रोग बढ़ते हैं, रोग से शोक बढ़ते हैं, और अन्त जीवन और यह संसार सारा जहर जैसा बन जाता है।

मनुष्य और कांच

छोटा सा कांच मनुष्य के चेहरे का माप निकाल सकता है उसका मुंह किस प्रकार का है यह बता देता है देखने की समझदार व्यक्ति जो दाग लगे हुए हैं उन्हें मिटा देते हैं इतने मात्र के लिए ही कांच का मूल्य है यह काम साधारण नहीं है। इसी प्रकार अन्तर दर्शन हेतु जिनेन्द्र भगवान की प्रतिमा परम उपकारी है जहां तक वीतराग दशा को प्राप्त न किया जावे वहां तक वीतराग की मूर्ति का दर्शन महान सहायक बन सकता है। इसीलिए मनुष्य को अन्तर देखने के लिए जिनेन्द्र भगवान की मूर्ति का दर्शन करना चाहिए।

स्वय का कौन

स्वय का कौन ? जिसे हम अपना मान ले वही थोडे समय में दूसरा बनकर खडा हो जाता है जो कोइ यह कहता है कि "मैं तो अपना ही हूं" तो यह सब झूठा है। सत्य को छुपाने और असत्य को बताने का सरस जादू है। इस जगत में कोइ किसी का हुआ है क्या ? जिस शरीर के लिए अनेकों कष्ट उठाये, कठिनाइयों की घाटियों को पार करते रहे किन्तु समय आने पर यह शरीर परत्व का पाठ पढाते हुए शिक्षा देता है कि भाग भाइ कौन किसका है ? स्वयं ही स्वय का है। स्वय को छोडकर दूसरों के पीछे दौडना और चलित सम्पत्ति को जोडते रहना किन्तु अन्त में तेरा कौन ? इसीलिए स्वय को ही स्वय का मानकर उसके अनुसार प्रवृति करना यही श्रेयस्कर है।



सपन कैसे

संसार में प्रत्येक प्राणी की प्रकृति भिन्न भिन्न प्रकार की होती है इतनी विशाल संख्या वाली प्रकृति की गिनती करना असंभव है तो भी इन सब को चार विभागों में समाया जा सकता है शैतान हैवान इन्सान और भगवान अथवा अधम, मध्यम, उत्तम और उत्तमोत्तम। जो स्वय रोता रहे वह शैतान, जो दूसरा को रुलाता

रहे वह हैवान जो हमेशा प्रसन्न रहता है वह इन्सान, और जो प्रसन्न रहता है और प्रसन्न रखता है वह भगवान, जो दूसरों का बिगाड़ कर स्वयं के ही स्वार्थ को साधता रहता है वह अधम, जो मात्र स्वयं के स्वार्थ को ही साधता है वह मध्यम, और दूसरों का हित ध्यान में रखते हुए स्वयं का स्वार्थ साधता है वह (इन्सान) उत्तम, जो स्वयं की चिंता छोड़ कर प्रत्येक के हित में निरत रहता है वह उत्तमोत्तम। शैतान आर्त ध्यान में रहता है और तिर्यंच गति में जाता है। हैवान रौद्र ध्यान में रहता है नरक गति का मेहमान बनता है। इन्सान धर्म ध्यान में ही लगा रहता है अतः उसे मनुष्य गति अथवा देव गति प्राप्त होती है। भगवान शुक्ल ध्यान में लीन रहते हैं उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

भावना का चंदन

मनुष्य उसके उच्च जीवन बगीचे में दुर्भावना के कंटकाकीर्ण बावलिये कभी नहीं होना चाहिए। इसमें तो परम शांति प्रद और मधुर परिमल फैलाने वाला सद्भावना के चन्दन वृक्ष ही शोभा दे सकते हैं। मलयागिरि पर चन्दन वृक्ष ही होते हैं ऐरावत हाथी पर लकड़ी का बोझा रखना क्या हास्यास्पद नहीं ? मनुष्य के मन में प्रत्येक जीव मात्र को परम शान्ति प्रदान देने वाला भावना का चंदन ही होना चाहिए।

जीवन पत्थर नहीं, चिन्तामणि

जीवन भार भूत पत्थर जैसा नहीं भार भूत चिन्तामणि जैसा है जिस व्यक्ति के जैसे विचार हों उस तरफ उसकी गति हो जाती है परिणाम भले ही खराब हो किन्तु वह स्वय या आदत को छोड़ना नहीं चाहता दुष्परिणाम को लाने वाले विचार और प्रवृति प्रत्येक मनुष्य को छोड़ना चाहिए। दुष्परिणाम जनक प्रवृति करने वाला जीवन को पत्थर जैसा बनाता है, सद् प्रवृति का करने वाला चिन्तामणि जैसी अमूल्य शक्ति वाला जीवन बना सकता है।



राग और त्याग

संसार के संताप और अशान्ति से भरे हुए वातावरण में किसी भी समय आत्मा को सुख प्राप्त नहीं हुआ और न हो सकता है। परम ज्ञाता विश्व वत्सल वीतराग द्वारा शान्ति का जो मार्ग बताया गया है उसी मार्ग पर चलने के पश्चात् ही परम आनन्द प्राप्त हो सकता है, वह मार्ग है परिग्रह का त्याग और संतोष का राग। बढ़ते हुए झगड़े और विवादों का मुख्य कारण यह परिग्रह का राग ही उसमें बैठा हुआ है।

व्यर्थ

बिना विनय का जीवन व्यर्थ है।
विनोद बिना का दिन व्यर्थ है।
बिना विवेक का जीवन व्यर्थ है।
बिना ज्ञान के जीवन अंधकार मय है।
ध्यान के बिना सिद्धि में अगाढ़ा पन है।
बिना त्याग का संग्रह व्यर्थ है।
बिना राग का वैराग्य व्यर्थ है।
बिना भाव की भक्ति व्यर्थ है।
समय को समझे बिना शक्ति व्यर्थ है।
बिना बुद्धि का बल व्यर्थ है।
बिना विद्या का विचार व्यर्थ है।
बिना समझे का आचार व्यर्थ है।
बिना चेतन का पुद्गल व्यर्थ है।
बिना समभाव की सामायिक व्यर्थ है।
सदुपयोग बिना धन का मूल्य व्यर्थ है।
बिना शिक्षा की किशोरावस्था व्यर्थ है।
बिना पुरुषार्थ की जवानी व्यर्थ है।
बिना संगठन का समूह व्यर्थ है।
बिना शक्ति का स्थान व्यर्थ है।
बिना सद्भावना की मित्रता व्यर्थ है।

मुक्त विहार

माया का चक्र और स्वार्थ की श्रृंखला इतनी दृढ़ होती है कि इसको भेदने और छेदने के लिए स्वयं परिश्रम, शक्ति और श्रद्धा को केन्द्रित करना आवश्यक है जब ही माया के चक्र का उच्छेदन और स्वार्थ की सांकल का भेदन व्यवस्थित हो सकता है तब ही मुक्त विहार और पवित्र विचार के साथ जीवन व्यतीत करने का सामर्थ्य प्रकट हो सकता है। आत्मा में अनन्त शक्ति है पुरुषार्थ के द्वारा प्रारब्ध को अपने अनुकूल बना लेना यह स्वयं के ही हाथ की बात है।



जो जैसा मिले उसे वैसा

जो करोगे नमस्कार तो मिलेगा सत्कार जो नमस्कार नहीं करोगे तो जीवन पथ अंधकार से छा जायेगा। नमस्कार करने से सारा संसार नम जाता है परमेष्ठी भगवतो के चरण पवित्र हैं, इतना ही नहीं किन्तु तारने वाले शक्ति शाली भी हैं, इनके शरण में जो जाता है वह अभय और निर्भय बन जाता है क्योंकि जिसके पास जो हो उसके पास से वही मिलेगा।

राग विराग और त्याग

राग विराग और त्याग दुनिया के प्रत्येक प्राणी में इन तीनों में से कोई एक अवश्य होता है। परम श्रेष्ठ परमात्मा के चरणों में सर्व समर्पित करने की प्रवृति का आविर्भाव नहीं तक नहीं हो वहां तक उसका भेद नहीं समझा जा सकता। मन अर्थात संसार प्रिय प्राणी राग की ओर आकृष्ट होते हैं, मन से आगे भाव तरफ लीन आत्मा को विराग प्रिय होता है, तथा त्याग वही करता है जिसे स्वभाव प्राप्त करने की इच्छा हो।



मन और आत्मा

मन और आत्मा दोनों पृथक पृथक हैं। मनन मन से होता है, भाव आत्मा में जागृत होते हैं, भाव स्थिर जब तक रहते हैं तब तक मनन उपरान्त जैसे विचार धारा बढ़ती जाती है वैसे वैसे पूर्व का विभव और पीछे से आविर्भाव होता जाता है, विचार जल जैसे तरंगी होते हैं। भाव मेरु जैसे अडिग होते हैं। भावों की उत्पति और विकास का क्षेत्र आत्मा है विचारों का आविर्भाव और विकास मन का क्षेत्र है। मन की चंचलता, क्षण, क्षण में चलती रहती है तथा भावों की गम्भीरता सदा एक जैसी रहती है।

मेरी कामना

हे आराध्य देव ! मुझे चंचल स्वभाव वाली लक्ष्मी की आवश्यकता नहीं है मुझे चाहिए आत्म गुणों का परम श्रेष्ठ धन मुझे नहीं चाहिए मकान महलात के बगले, चाहिए केवल स्वभाव स्थित स्वय का घर बाह्य सुख की असामान्य कामना नहीं है कामना है स्वभाव में रमण कर तन्मय होने की और कल्याण मार्ग को साध लेने की।



ज्ञाता और दृष्टा

अरे आत्मा ! मन के इस जल तरंगी स्वभाव के कारण बहुत कुछ खो दिया है और फिर उसी की तरफ-दारी की तरफ प्रवृति कर रहा है तू ! इसका कारण यही है कि अभी तक तुझे स्वय की स्थिति का ज्ञान नहीं तू ज्ञाता होकर भी अज्ञात बन रहा है। तू दृष्टा होकर भी आँख मिचौनी कर रहा है। तू सर्व शक्ति सम्पन्न होते हुए अशक्त बन रहा है, तू शाश्वत है, देह नश्वर है, तू सच्चिदानन्द स्वरूप है देह नाशवत है देहाध्यास के कारण तू अपने स्वरूप से दूर रहा है किन्तु अन्त में तो तुझे इस देह आसक्ती दशा का त्याग तो करना ही पड़ेगा।

दो पाँखें

एक पंख से पक्षी उड़ नहीं सकता है, वह स्वयं के दोनों पंखों की शक्ति के आधार पर ऊँचे आकाश में सरलता से उड़ सकता है, इसी प्रकार ज्ञान और क्रिया दोनों जीवन में जब तक आ नहीं जाते वहां तक यह आत्मा स्वयं के श्रेष्ठ पथ पर अबाध गति से नहीं चल सकती।



उज्ज्वल भविष्य

जिसका मन दृढ़ होता है उसे कर्त्तव्य पालन की लगन लगी रहती है। जिसका वचन निश्छल है उसके एक एक शब्द में जागरण की दुंदुभी बजती रहती है। जिसका शरीर स्वस्थ है वही सेवा, धर्म को अच्छी प्रकार से कर सकता है। इस प्रकार मन दृढ़, वचन निश्छल और शरीर स्वस्थ है। ऐसे ही कार्यकर्ता शासन का भविष्य उज्ज्वल कर सकते हैं।

नेता की योग्यता

नेता अर्थात ले जाने वाले, नेता पर प्रत्येक का विश्वास होता है, परन्तु कब जब नेता जागृत दिल का होता है। शुद्ध विचारों का नेता प्रत्येक को शुद्ध बना देता है जिसमें प्रतिभा और ज्ञान होता है इतना ही बल्कि समय आने पर जो प्रत्येक को जगाने की शक्ति रखता है वही नेता बनने की योग्यता रख सकता है। नेता बनाने के पूर्व जनता को खूब गम्भीरता पूर्वक विचार कर लेना चाहिए और नेता बनने के पूर्व स्वयं उम्मीद्वार को स्वयं विचार कर लेना चाहिए। तो ही अनुशासन पूर्वक सब कुछ हो सकता है

बिंदु मंत्र

नीचे की ओर दौड़ना सब के लिये सरल है किन्तु आराधना के पहाड़ के ऊपर चढ़ने वाले कोई एक बार ही मिलते हैं। ज्ञान हेतु शंका की जा सकती है परन्तु ज्ञान में कहीं भी शंका को स्थान नहीं है।

मुनिराज श्री जयन्तविजयजी द्वारा लिखित तथा

सम्पादित-साहित्य

*	पीयूष प्रभा	(कथा साहित्य)	
*	भक्ति सुधा	(भक्ति गीत)	
*	आत्म दर्पण	मननीय लेखन	० ५०
	पारसमणि	हिन्दी, गुजराती	०-२५
	जीवन मंत्र	,, ,,	१-५०
	अधारे दीवा	,,	०-२५
	सोनेरी सभारणा	गुजराती	०-२५
	प्राचीन पारसनाथतीर्थ	,,	० ५०
	गुरुदेव पुष्पाजली	,,	० ५०
	भक्ति रस गगा	हिन्दी	० २५
	स्वाध्याय सौरभ		१-००
	चैत्यवन्दनमाला	(गुजराती)	२ ००

* इस चिन्ह वाली पुस्तकें स्टॉक में नही है।

—प्राप्तिस्थान—

श्री यतीन्द्र-साहित्य-सदन

सरस्वती-विहार, भीलवाडा

मुनि श्री जयन्तविजयजी

'मधुकर'-साहित्य

—*—

पीयूष प्रभा	—
भक्ति सुधा	—
आत्म दर्पण	० ४०
पारसमणि	० २५
जीवन मंत्र	१ ५०
अगार दीवा	० २५
सोनेरी समारणा	० २५
प्राचीन पारसनाथतीर्थ	० ५०
गुरुन्द्र पुष्पावली	० ५
भक्ति रस गंगा	० २५
स्वाध्याय सौरभ	१ ००
स्तवनरत्नमाला	२ ००

प्राप्ति स्थान —

यतीन्द्र साहित्य सदन

मरुधरनी विहार, भाल्याड़ा